श्रीः

ज्ञान-प्रकाश

अर्थात्

जीवराज का मुक्ति साधन

चन्दरलाल कुमावत ब्यावर निवासी कृत

पं० प्रह्लादराय शर्मा
ब्यावर निवासी ने
छपा कर प्रकाशित किया ।

सत्यव्रत शर्म्मा द्वारा
शान्ति प्रेस, मोतीकटरा, आगरा में मुद्रित

प्रथमावृत्ति १०००] रामनवमी १९८० [मूल्य ॥=)

भूमिका

महानुभाव सज्जनों से मेरा प्रथम नमस्कार।

मेरा प्रथम समर्पण आपके करकमलो में है। क्या आप मेरी धृष्टता क्षमा करेंगे? हां! मुझे पूर्ण आशा है अवश्य क्षमा करेंगें।

आज का समर्पण एक मारवाड़ी ख्याल है। ज्ञान प्रकाश के लिए ज्ञान प्रकाश है। इसका पूर्व परिचय इस प्रकार है कि चरित्र तो सम्पूर्ण मन विराचित है परन्तु जहां तक हो सका है अश्लील (बुरे) वाक्यों की भरमार छोड़ दी है। अच्छे तथा चरित्र शुद्ध पात्रों के लिये विशेष स्थान है। मैं विशेष न कह कर इतना ही उचित समझता हूँ सम्पूर्ण पुस्तक ज्ञान से परिपूरित है।

इस पुस्तक में पं० प्रहलादराय जी शर्मा ने सब प्रकार सहायता दी है अतएव मैं इन का कृतज्ञ हूँ। शुभम्।

आपका कृपाभिलाषी—

चन्द्रलाल कुमावत

लेखक।

श्रीगणेशायनमः ।



❀ ज्ञान प्रकाश ❀

—※❀※❀※—

प्रथम भाग ।

ख्याल ।

स्तुति गणेश जी की । टेर ।

अजी मनाऊँ गणपति श्री गनराज, सभापति रखो हमारी लाज । दो० । गणपति जी गोरी के नन्दन, शिव शंकर के लाल । मस्तक ऊपर छत्र विराजे, कानन कुण्डल भाल ॥ अजी मनाऊँ० ॥ १ ॥ हाथ जोड़ विनती करूँ सजी, कृपा करो गनराज ।

रणत भंवर से आओ घूमता, रिध सिध के सरताज ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ २ ॥ मूल मैल मंजन करें सजी, प्रसन्न होय गनराज । जो नित मांजे मूल को सजी, होय सिद्ध सब काज ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ ३ ॥ शारद ! शीश नमाऊँ तुमको, कण्ठ कमल शुद्ध कीजो । परा, पसन्ती, मधू वेकरी, ताको भेद मोय दीजो ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ ४ ॥ सत् गुरु स्वामी अंतरयामी, देओ ज्ञान भरपूर । शरण पड़्यो प्रभु आपकी सजी करो कुमति न दूर ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ ५ ॥ मात पिता और सत्यसभा के, चरणों शीश नमाऊॅ । सब ही कृपा करो मम ऊपर, ख्याल ज्ञान को गाऊँ ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ ६ ॥ द्विपञ्चा शत भैरव सिमरूँ, चौसठ योगिनी मात । शनी देव, हनुमान मनाऊॅ, करो मुझे गुण ज्ञात ॥ अजी मनाऊॅ० ॥ ७ ॥ हमीर रामजी गुरू हमारे हमको ज्ञान

बताया। करो सुमंगल दंगल अंदर, मैंने तो शीश झुकाया ॥ अजी मनाऊँ० ॥ ८ ॥ चन्द्र-लाल की विनती सजी, सुनज्यो जी गनराज। मन इच्छा पूरण करो सजी, रखो सभा मे लाज ॥ अजी मनाऊँ गणपति श्री गनराज। सभापति रखो हमारी लाज॥ ९ ॥

शेर-जीव राजा का।

समरूँ प्रथम गुरु चरण रज मुकट मणि ज्यों धार हूँ। करो भवसिन्धु से पार वेड़ा मैं शरण आधार हूँ॥ तुम गुरु दीनदयाल जग में सृष्टि के करतार हो। अजी दास तारण कारणें लीनों मनुज अवतार हो ॥ गुरु विन ज्ञान न पावहि नर जैसे पशू समान हो। पूंछ विन पशुतुल्य है बिलकुल निपट अज्ञान हो ॥ वृथा जीवन जगत् में जिन भज्यो न ईश्वर नाम हो। सुन्दर तन को पाय के कियो

न सुकृत काम हो ॥ मेरा गुरु जी "रास" के मैं करूं चरण प्रणाम हो । कहे चन्द्रलाल, देदो दास नै निज ज्ञान हो ॥ १० ॥



जीवराजा की स्तुति शारदा के प्रति ।

टेर । शारद ! सुख संपति वाणी दीजिये जी सुण अर्जी हमारी ॥ दोहा० ॥ सरस्वती समरूं शारदा स मैं धर चरणन में ध्यान । सरस्वती और गुरु देव मनाऊँ यदा ऊपजे ज्ञान ॥ (झेला) ॥ यदा ऊपजे ज्ञान ध्यान उर में धरूँ । बेड़ा कीजो पार चित्त चरणो धरूँ ॥ सुण अर्जी हमारी० ॥ १ ॥ हे दुर्गे तु आदि भवानी कर घट में उजियाला । अन्धकार को मेट भवानी खोल ज्ञान का

लायके । आओ सभा के बीच जी हंस सजाय के ॥ सुण० ॥ २ ॥ माता तेरा आसरा सजी, पूर मनोरथ काम। चार कोण के मायने देवी छायो तेरो नाम ॥ (झेला) छायो तेरो नाम कला भरपूर है । निकसी बीच पताल पुजायो नीर है ॥ सुण० ॥३॥ दुर्गाथाने करूं विनती मेरी अरज चितलाय । बुद्धि सवायी देवो भवानी कण्ठ शुद्ध कर आय ॥ (झेला) कण्ठ शुद्ध कर आय वालको जानके । कथूं ज्ञान को ख्याल सभा में गायके ॥ सुण० ॥४॥ बलिहारी गुरु देव की सजी में उनका गुण गाऊं। दया करो हमीर जी स में नयो तमाशो गाऊं ॥ (झेला) नयो तमाशो गाऊं ब्यावर इस शहर में । कथ कहे जी चन्द्रलाल गुरु की महर में ॥ सुण अर्जी हमारी ॥५॥१५॥

वार्ता।

संसार में स्त्रियों के तुल्य सुख का साधन नहीं, साथ ही दुःख का भण्डार भी है। सुख तो किसी २ को मिलता है, किन्तु दुःख तो सब के साथ बांह प्रसार कर अवश्य मिलता ही है। ऐसे ही हमारे चरित-नायक जीवराज को दुष्टा स्त्री कुमति के साथ संबंध हो जाने पर अत्यन्त कष्ट उठाने पड़ते हैं। अन्त में दुःखी होकर पश्चात्ताप करते हैं ॥१६॥

जीवराज की

टेर। आया मैं कायागढ़ का राजा जी है जीवराज मेरा नाम ॥ दो० । लख चौरासी मांयने सजी पूरण कष्ट अपार । सब योनी मे जीव सिरै हे नरतन को अवतार ॥ कांई चूक पडी मम माहीं मिलगी कुमता नार। आया मैं० ॥ १ ॥ ऐसा सुन्दर तन को पाके

भज्यो न ईश्वर नाम । वृथा जीवन जगत् में स जिन कियो न सुकृत काम ॥ कुमता नार पडी मेरे पाने लियो न मुख से राम ॥ आया मैं० । २ ॥ अब तो दुखी कियो अति भारी या, जो कुमता नार । मनुज डाव यो चूकस्यूं स फिर मिलसी नरक द्वार ॥ ऐसा कोई मिले जी मुझको देवे कुमत निकार ॥ आया मैं० ॥३॥ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह मुझे कर दीनो अज्ञान । कुमता राणी परणी जद से रह्यो न मुझ में ज्ञान ॥ आशा, तृष्णा मुझे सतावे रखे कुमत को मान ॥ आया मैं० ॥ ४ ॥ लोभी, लुच्चा मिले बहुत सा वार २ उलझावे । उलझा न साचो सुलझावे ऐसा सत् गुरु पावे ॥ नाव पड़ी मझधार भंवर में सच खेवटियो चावे ॥ आया मैं० । ५ ॥ हो जी आप दयालू दाता कीजो मो पर महेर । मेरा अवगुण माफ करो सब मती लगाओ

देर ॥ चन्द्रलाल कुमावत कहता होसी सत से खैर । आया मैं० ॥ ६ ॥ २४ ॥

संतोष का शेर ।

मैं संतोषी पुरुष हूँ धरूँ ज्ञान को ध्यान जी । ज्ञान मेरो जगत् में पूरण वधायो मान जी ॥ साधू है असली सन्त मुझको वह लियो पहचान जी । विषय रूपी भोग तज कीयो है अमृत पान जी ॥ २५ ॥

संतोष की ।

टेर । आया संतोष पुरुष सत्यवादी, जी नहीं विकार नहीं हां वादी ॥दो०॥ शील नगर है धाम हमारा कायागढ़ में आया । दया धर्म को देख यहां पर मेरा जीव ललचाया ॥ आया संतोष० ॥ १ ॥ दोय मित्र तो मिले हमारे करूँ और की खोज । क्षमा और मिल जाय यहां पर बने वहुतसी मोज ॥

आया संतोष० ॥ २ ॥ धीरज को हेरण चलूँ सजी इस नगरी के मांय । ज्ञान गुरु मिल जाय यहां पर होय सर्व की सहाय ॥ आया संतोष० ॥ ३ ॥ ज्ञान गुरु मिल गया हमारा होय सिद्ध सब काम । भाव भगत को बेग बुलाया चलां आपणे धाम ॥ आया संतोष० ॥ ४ ॥ जो कोई गिरियो अन्धकूप मे वांने बाहर लावां। काम हमारो यो ही कहिये जीव राज चेतावां ॥ आया संतोष० ॥ ५ ॥ जीव-राज नगरी को राजा उसे चेतावां चालां । सुमता को परणाय के सजी कारज सिद्ध कर चालां ॥ आया स० ॥ ६ ॥ ३१ ॥

ज्ञान । शेर ।

ध्यान से सन्तोष सुन, कर सन्त का तू भेप भी ॥ कायागढ फेरी देवो जाकर करो उपदेश भी ॥ जीवराज घवरा रह्यो कुमता को

देर ॥ चन्द्रलाल कुमावत कहता होसी सत से खैर । आया मैं० ॥ ६ ॥ २४ ॥

संतोष का शेर ।

मैं संतोषी पुरुष हूँ धरूँ ज्ञान को ध्यान जी । ज्ञान मेरो जगत् में पूरण वधायो मान जी ॥ साधू है असली सन्त मुझको वह लियो पहचान जी । विषय रूपी भोग तज कीयो है अमृत पान जी ॥ २५ ॥

संतोष की ।

टेर । आया संतोष पुरुष सत्यवादी, जी नही विकार नहीं हां वादी ॥दो०॥ शील नगर है धाम हमारा कायागढ़ में आया । दया धर्म को देख यहां पर मेरा जीव लल-चाया ॥ आया संतोष० ॥ १ ॥ दोय मित्र तो मिले हमारे करूँ और की खोज । क्षमा और मिल जाय यहां पर बने बहुतसी मौज ॥

आया संतोष० ॥ २ ॥ धीरज को हेरण चलूँ सजी इस नगरी के मांय । ज्ञान गुरु मिल जाय यहां पर होय सर्व की सहाय ॥ आया संतोष० ॥ ३ ॥ ज्ञान गुरु मिल गया हमारा होय सिद्ध सब काम । भाव भगत को वेग बुलायाँ चलां आपणे धाम ॥ आया संतोष० ॥ ४ ॥ जो कोई गिरियो अन्धकूप मे वांने बाहर लावां। काम हमारो यो ही कहिये जीव राज चेतावां ॥ आया संतोष० ॥ ५ ॥ जीव-राज नगरी को राजा उसे चेतावां चालां । सुमता को परणाय के सजी कारज सिद्ध कर चालां ॥ आया स० ॥ ६ ॥ ३१ ॥

ज्ञान । शेर ।

ध्यान से सन्तोष सुन, कर सन्त का तू भेष भी ॥ कायागढ़ फेरी देवो जाकर करो उपदेश भी ॥ जीवराज घवरा रह्यो कुमता को

राज विशेष भी ॥ राज को समझाय कर सुमता करो प्रवेश भी ॥ ३२ ॥

संतोष। शेर।

आज्ञा धरी गुरु शीश में धारूँ सन्त का जो भेष जी ॥ मोह वश अज्ञान को जाकर करूँ उपदेश जी ॥ दया धर्म और नेम संग सुमत करूँ प्रवेश जी । कुमता औ तृष्णा, लोभ, मद इनका छुड़ाऊँ देश जी ॥ ३३ ॥

वार्ता

संतोष के गुरु ज्ञान की आज्ञा मान, साधु का भेष धारण कर और कायागढ़ नगर में फेरी देते हुए गाना ॥ ३४ ॥

साधु।

टेर। आया मैं सन्त बड़ा सन्तोषी जी कोई मिले हमारा देशी ॥ दो० ॥ अमर शहर

है ग्राम हमारा कायागढ़ में आया। फेरी देवां बहुत देर से नहीं दयालु पाया आया मैं० ॥१॥ चारों तरफ मैं फिरा नगर के देशी नजर नही आया। कायागढ़ के सिंह द्वार पर क्रोधी द्वारी पाया ॥ आया मैं० ॥ २३६ ॥

क्रोधी

टेर। हां २ म्हे क्रोधी सेवक थारा जी कांई कहो बाबा जी म्हारा ॥

साधु।

टेर। क्रोधी। जीवराज पर जावां रे मिलकर पाछा आवां ॥ क्रोधी—दो०। काम क्रोध, मद, लोभ, मोह सब साधु के ढिग आया। कांई आपके काम बाबा जी म्हानें नही फरमाया ॥ हां २ म्हें क्रोधी० ॥ १ ॥

साधु—दो०। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह से मेरे कुछ नहीं काम। जीवराज राजा

राज विशेष भी ॥ राज को समझाय क
सुमता करो प्रवेश भी ॥ ३२ ॥

संतोष । शेर ।

आज्ञा धरी गुरु शीश मैं धारूँ सन्त क
जो भेष जी ॥ मोह वश अज्ञान को जाक
करूँ उपदेश जी ॥ दया धर्म और नेम सं
सुमत करूँ प्रवेश जी । कुमता औ तृष्णा
लोभ, मद इनका छुड़ाऊँ देश जी ॥ ३३

वार्ता

संतोष के गुरु ज्ञान की आज्ञा मान
साधु का भेष धारण कर और कायागढ़ नग
में फेरी देते हुए गाना ॥ ३४ ॥

साधु ।

टेर । आया मैं सन्त बड़ा सन्तोषी
कोई मिले ...

है ग्राम हमारा कायागढ़ में आया। फेरी देवां बहुत देर से नही दयालु पाया आया मैं० ॥१॥ चारों तरफ मै फिरा नगर के देशी नजर नहीं आया। कायागढ़ के सिंह द्वार पर क्रोधी द्वारी पाया ॥ आया मैं० ॥ २३६ ॥

क्रोधी

टेर। हां २ म्हें क्रोधी सेवक थारा जी कांई कहो बाबा जी म्हारा ॥

साधु।

टेर। क्रोधी ! जीवराज पर जावाँ रे मिलकर पाछा आवां ॥ क्रोधी—दो०। काम क्रोध, मद, लोभ, मोह सब साधु के ढिंग आया। कॉई आपके काम बाबा जी म्हांनें नहीं फरमाया ॥ हां २ म्हें क्रोधी० ॥ १ ॥

साधु—दो०। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह से मेरे कुछ नहीं काम। जीवराज राजा

साधु की जीवराज से।

टेर। राजा नहीं सजै लो ज्ञान वो सुमता चित धारो।

जी०–दो०। शरणो लीनो आपको स्वामी कर भवसागर पार। नाव पड़ी मझधार भंवर में कर खेवटियो तैयार। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह मुझे छोड़ दियो मझधार॥ गुरुज्ञान वताओ० ॥१॥

सा०–ज्ञान ध्यान तेरे से बच्चा नहीं पड़ेलो पार। सुमता न तू व्याह ले स याहै सारां की सार॥ कुमता नै छिटकाय केस तुम करो सुमता से प्यार॥ सुमता चित धारो० ॥२॥

जी०–सुमता को स्थान कोन मैं जाणूं नहीं दयाल। आशा तृष्णा आय के मुझे फसा दियो भव जाल॥ सुमता न वखसीस दो गुरु मेटो जीवजंजाल॥ गुरु ज्ञान वताओ ॥३॥

सा०-सुमता नै में वगस द्यूँ स थे रख ज्यों इण को मान । अष्ट प्रहर चोसट घटी स थे पूरण धरज्यो ध्यान ॥ आओ सुमता वक्षु थानै हुकमे दियो गुरुज्ञान ॥ सुमता चित धारो० ॥४॥५३॥

वार्ता ।

साधु०-हे राजा मैंने गुरू ज्ञान का हुकुम मान, ये सुमता स्त्री तुझे दी । अब तेरा धर्म यह है कि किसी बुद्धिमान् पंडित को बुलवा कर, इस के साथ वेद की विधि से विवाह करले। इसी काम से तेरा कल्याण होगा ॥ ५४ ॥

जीवराज-गुरू जी महाराज ! जो कुछ आपने हुकुम दिया है सारा काम उसी तरह हो जायगा ॥५५॥

साधु—(स्वयमेव) संसार की गति बड़ी विचित्र है। बुरे मार्ग से हटाने वाले को अपना शत्रु समझते हैं। कुमति के वश में पड़े हुए इस जीवराज को मेरा ज्ञान देना कितना बुरा लगा कि गोला मारने के लिए तैयार हुआ। परन्तु स्त्री के दिखाते ही चरणों में लोटने लगा। इसके लिए लोटना तो ठीक ही है क्योंकि यह सुमति है। परंतु ये मूर्ख इसके गुण को क्या जाने, इसे तो रूप प्यारा है। बहुत से लोग कुलक्षणी स्त्री के वशीभूत हो जीवन को बिगाड़ देते हैं। भाइयो ! समझदारों को तो इतना ही बहुत है। (अन्तर्धान) ॥ ५६ ॥

जीवराज की जोशी से।

टेर। फेरा करवाद्यो सुमता नार से जोशी जी म्हारा ॥

टेर । फेरा करवायूँ सुमता नार संग मुनिराज वगसग्या ।

जीव०—दो० । फेरा करावो नार संग थे मती लगाओ वार । भाग पूरवला उदय हुया कोई मिल गई सुमता नार ॥ जोशी जी म्हारा ॥ १ ॥

जो०—दो० । फेरा कराऊँ नार संग कर तोरण थम्भ तैयार । नेकी धीरज सखियां ल्यावो गावे मंगलाचार ॥ मुनिराज वग-सग्या ॥ २ ॥

जी०—जोशी जी बुद्धि के सागर देखो लगन शुभ आज । जल्दी फेरा देवो जोशी होय सुमता को राज ॥ जोशी जी म्हारा ॥३॥

जो०—शुभ घड़ी शुभ लगन आज को आनन्द मंगलचार । आओ जी चालो फेरा

में मति लगाओ वार ॥ मुनि राज वग-सग्या ॥ ४ ॥ ६० ॥

सखियों का गाना

(राग जलामारू)

टेर । अजी मैं तो थांको वंगलो निरखण आई जी म्हारी जोड़ी का जिवराज ॥

इस वंगला नै विधना अजव वनायो जी म्हारी जोड़ी का जिवराज । पांच पचीस त्रिगुण संग मिलाया जी म्हारी जोड़ी का जिवराज ॥ मैं तो थारो वंगलो० ॥ १ ॥ देखी यक इस वंगला की चतुराई जी म्हारी जोड़ी का जिवराज । नींव नहीं है अधर सही ठहरायो जी ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥ मैं तो थारो० ॥ २ ॥ इस वंगला के दश दरवाजा दीशे जी म्हारी जोडी ००००० । तीन अटारी गुप्त सही अतिभारी जी म्हारी जोडी ०००००

मैं तो थारो० ॥ ३ ॥ इस बंगला के पचरंग रंग लगाया जी म्हारी जोडी का जिवराज । नो मास गर्भ में ताव लगार पकायो जी म्हारी जोड़ी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥४॥ दश इन्द्रियां में पांच इन्द्रिय गुणज्ञानी जी म्हारी जोड़ी का जिवराज । पांच रही सो कर्म इन्द्रिय कहावे जी म्हारी जोड़ी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥५॥ इस बंगला में अजब बाग लगवायो जी म्हारी जोडी का जिवराज । शाखा साड़ा तीन करोड फलाई जी म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥६॥ अमृत रूपी होद अमी जल भरियो जी म्हारी जोडी का जिवराज । सतवादी होय पुरुष वगीचो पायो जी म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥७॥ चेतन माली चोकस जल फैलायो जी म्हारी जोडी का जिवराज । सांच पाणतियो फिर २ फेरूँ पायो जी

म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मैं तो थारो०॥८॥ इस बंगला में जीवराज महाराज विराज्या जी म्हारी जोडी का जिवराज । बंगला मांय दया धर्म से रीजो जी म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥९॥ इस बंगला नै ईश्वर खूब सजायो जी म्हारी जोडी का जिवराज। नेकी धीरज सुमता रै मन भायो जी म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मैं तो थारो० ॥१०॥ इस बंगला की महिमा वर्णि न जावे जी म्हारी जोडी का जिवराज । चन्द्र मजलिस अन्दर ज्ञान बतायो जी म्हारी जोडी का जिवराज ॥ मै तो थारो० ॥ ११ ॥ ७१ ॥

फिर सखियों का गाना ।
राग—कामण ।

टेर । तोरण आयो ये रायजादो सखियां चाल २ ए । कामण करस्यां ये सहेल्यो जल्दी चाल २ ए ॥

कामण करस्या जल्दी चाल। वाने देस्यां सुमता लाल। प्रीतम माल २ ए। तोरण आयो० ॥१॥ तोरण आयो है जिवराज। चालो करस्या पूरण काज। जादू डार २ ए ॥ तोरण आयो० ॥२॥ झिलमिल करां आरती चाल। वह छः आदि पुरुष का लाल। भरस्यां वार २ ए ॥ तोरण आयो० ॥३॥ तोरण दीनो लाड़ो मार। आसी खूब ब्याह की भार। जनेती सार २ ए ॥ तोरण आयो० ॥४॥ आया मंडप के दरम्यान। धरियो चवरी हन्दो ध्यान। सुमता चाल २ ए ॥ तोरण आयो० ॥५॥७६॥

सुमता।

शेर। सुमरूं में देवी शारदा कर महर मुझ पर आय जी। राखो सभा में लाज सारो काज मोटी माय जी ॥ चार खूंट नौ खण्ड में महिमा तेरी भरपूर जी। ज्योति अटल शिर

छत्र है अर्जी करो मञ्जूर जी ॥ करुणा करूँ चरणां पड़ूँ मेरी तरफ चित धार जी । दंगल में मंगल आन कर वेड़ा लगावो पार जी ॥ शक्ति भगत यक दास तेरा जोड़ता है हाथ जी । चन्द्र को चाकर जाण के कृपा करो तुम मात जी ॥ ७७ ॥

सुमता की सखियों से ।
राग–हूलरिया ।

टेर । चालो २ ये सहेलियो ! प्रीतम फेरां आयो छ ॥ चोक । म्हानै हुक्म दियो गुरु ज्ञान । म्हारो संतोष वधायो मान । अब है जीव राज से काम । जाता लाज ही आव छ ॥ चालो २ ये० ॥ १ ॥ नेकी होजा म्हारी लार । करस्या जीवराज की सार । आपां सब मिल करस्या प्यार धीरज ! क्यूँ वार लगावे छ ॥ चालो २ ये० ॥ २ ॥ क्षमा तू कीजो म्हारी सहाय । म्हारे वाप नहीं कोई माय ।

तू तो वन जा म्हारी धाय। जोशी वेग बुलावे छ ॥ चालो २ ये० ॥ ३ ॥ अब मैं सजूं सोला शृंगार। वस्त्र शील रूप ल्यूं धार। करस्यूं जीवराज से प्यार। म्हां से प्रेम लगावे छ ॥ चालो २ ये० ॥ ४ ॥ होगी पहर ओढ़ तैयार। गहनो मुक्ति रूपी धार। लेस्यूं काम क्रोध न मार। जीव जंजाल छुडावे छ ॥ चालो २ ये० ॥ ५ ॥ सुमती संग लियो परिवार। कोड्यो भाव भगत को तार। आगे हथलेवा की बहार। फेरा प्रेम फिरावे छ ॥ चालो २ ये० ॥ ६ ॥ फेरा फिरिया सत् का सात। अब कर जोड़ूं दोनों हाथ। थे तो हो गया म्हारा नाथ। चन्द्र यूँ समझावे। चालो २ ये० ॥ ७ ॥ ८४ ॥

वार्ता।

पाठकों को यह शंका अवश्य होगी कि राजा होने पर भी विवाह में इतनी शीघ्रता

क्यों की। इसके लिए हम यों लिखते हैं कि जीवराज को कुमता के पिता मोह का बड़ा भय था, यदि उसे मालूम हो जाती तो विवाह नहीं होने देता। विवाह हो जाने के पीछे अपने कुल की रीति के अनुसार सब काम कर लिया। अब सखियां जीवराज से पहेलियों का अर्थ पूंछती हैं ॥८५॥

सखियों की जीवराज से।

टेर। प्यारा जीवराज जी म्हारी फाली को अर्थ बताय।

जीवराज की सखियों से।

टेर। सती अति सुन्दरी थान देस्यां अर्थ बताय॥

सखि०-प्र०-(चोक) पांच चीज निज सार है जिव जी सब जग है आधार। नित उठ

नेत का चावती जी थे तो शायर करो जी विचार ॥ प्यारा जीवराज०॥ १॥

जी०--(उ०) पांच तत्व ततसार है प्यारी सुन ज्यो चित्त लगाय। पृथ्वी, जल, अग्नि, भयो प्यारी पवन आकाशा रै मांय॥ सती अति० ॥ २ ॥

सखि०--(प्र०) तीन गुण परवाण है जिव जी गावे वेद पुराण। नाम स्वभाव बतावसी कोई चात्रक चतुर सुजान॥ प्यारा जीवराज० ॥ ३ ॥

जीव०--(उ०) रजोगुण ब्रह्मा हुया जी विष्णु सतोगुण जाण। तमोगुण शंकर हुया प्यारी लीजो आय पिछाण॥ सती अति० ॥४॥

सखि०--(प्र०) मूल एक फल दोय है जिव जी इण रो करो जी विचार। रचना

उनसे रच रही जिव जी सारे ही संसार ॥ प्यारा जीवराज० ॥ ५ ॥

जीव०--(उ०) मूल एक फल दोय है प्यारी जिसका करूँ मैं बयान। माया ब्रह्म दोनों हुया प्यारी मूल परमेश्वर जाण॥ सती अति० ॥ ६ ॥

सखि०--(प्र०) सब रंग तो जल से हुआ जिव जी जाणत है सब कोय। जिण रंग से वो जल हुया जिव जी वो रंग कैसा होय ॥ प्यारा जीवराज० ॥ ७ ॥

जीव०--(उ०) अग्नि से उत्पन्न हुया प्यारी अग्नि में हो लीन। जल का बीज तो तेज है प्यारी होय उसी से उत्पन्न सती अति० ॥ ८ ॥

सखि०--(प्र०) कोन सुण्यो कुण निरखियो जिव जी कुण है मिलावण हार। जल्दी

अर्थ बतायद्यो जिव जी मतीं लगाओ वार ॥ प्यारा ज़ीवराज० ॥ ९ ॥

जीव०--श्रवण सुणे, नेत्र निरखिया प्यारी प्रेम मिलावण हार। सुरत नुरत और प्रेम है प्यारी सुणजे सुन्दर नार ॥ सती अति० ॥ १० ॥

सखि०--(प्र०) चार पुरुष सोला नार है जिव जी जिसका करो जी विचार। वाहिर मतना डोल ज्यो जिव जी घट में करो जी सुमार ॥ प्यारा जीवराज० ॥ ११ ॥

जीव०--(उ०) चार पुरुष अंगूठा हुया अंगुली सोला नार। वाहिर तो मिलता नहीं प्यारी है इस तन की लार ॥ सती अति० ॥ १२ ॥ ९७ ॥

सखियों का गाना।

टेर। पार थानै करे हो दे दी अमरापुरकी सार। (चोक) कुमता के संग सांयनै

जी थे तो पायो दुख अपार। दया करी गुरू ज्ञान ने जी थाने दे दी सुमती नार॥ पार थानें० ॥ १ ॥ भरम थानै भरमाविया जी कवरां लख चोरासी मांय। म्हारी सुमता बाई न देखतां जी थाको भरम ही भाग्यो जाय ॥ पार थानै० ॥ २ ॥ भाव भोजन त्यारी करी जी कंवरां कंवर कलेव चाल। सत्य जनेती संग ल्यो जी कंवरां तरुण वृद्ध और बाल ॥ पार थाने० ॥ ३ ॥ रुच २ भोजन जीमल्यो जी थांकी दया करे सनवार ॥ जीवराज जी लाडला जी थाने सखियां गावे गाल ॥ पार थानै० ॥ ४ ॥ जीमजूंठ पूरण भया जी कवरां सीख दिरास्यां आज। जावो थांकां ग्राम न जी थांपर रंग राला छां राज ॥ पार थाने० ॥ ५ ॥ १०२ ॥

वार्ता।

जीवराज विवाह से निपट कर अपने

महल में जाते हैं। सखियों का सुमता को पहुंचाते जाना, तथा गीत गाना ॥ १०२ ॥

सखियों का गाना। (रागनी)

टेर। सुमता बाई सिध चाली ये आयो राजा जी को पूत लीनी बाई न जीत सुमता बाई सिध चाली ये ॥ (चोक) हे मोत्यां मायली लाल। लीनी बाई न टाल॥ सुमता बाई० ॥ १ ॥ कीना चौरासी का काम। बणग्या बाई रा श्याम ॥ सुमता बाई० ॥ २ ॥ सुकृत कीजो काम। पुगाज्यो निज धाम ॥ सुमता बाई० ॥ ३ ॥ १०६ ॥

सुमता की जीवराज से।

टेर। चोपड़ खेलोनी धणरासाहवा काया-गढ़ माहीं ॥

जीवराज की सुमता से।

टेर। चोपड़ में खेलूं सुमता आपसे निज सार खिलाज्यो ॥

सुमता—(दोहा) चोपड़ खेलो सायबा स थे कायागढ़ के मांय । पासा देऊं ज्ञान का सजी और सार कछुनांय । अजी कायागढ़ माहीं ॥१॥

जीव०—(दोहा) पासा देओ ज्ञान का स जी कर भवसागर पार । आवागमन मेट द्यो म्हारा लीजो निश्चय धार । निज सार खिलाज्यो ॥२॥

सुमता—म्हे धारी थे मान ज्यो स पिव सदा ज्यो राखो याद । थोड़ो सो जीनो दुनियां में छोड़ो वाद विवाद । अजी काया० ॥३॥

जीव०—थे सुन्दर सांची कही स मैं मानूं थाकी सीख । कुमता के संग मांय ने स मैं घर २ मांगी भीख ॥ निजसार खिलाजो ॥४

सुमता–प्रीतम प्यारा नहीं रहां न्यारा है पूरवली प्रीत । आओ हिल मिल चोपड़ खेलां ल्यां चोरासी जीत ॥ अजी काया० ॥ ५ ॥ १११ ॥

कुमता का तृष्णा सें । शेर ।

तृष्णा तैयारी झट करो ल्यो हुक्म मेरा मानरी । दीपक जले क्यूं रोशनी होती महल दरम्यान री ॥ ल्यावो खवर तुम जाय के आवे मुझे इमान री । दीखे सुरंगी ढोलणी तड़फे है मेरा प्राण री ॥ आता शुभा कुछ पीव का दुसरी का धरिया ध्यान री । जल्दी गमन कीजो महल तृष्णा करो पहचान री ॥ ११२ ॥

तृष्णा का कुमता से । शेर ।

राखो सवर ल्यांऊं खवर वाई मैं जाऊं महल जी । ढलती जों मांझल रात ना कोई साथ खाऊं दहल जी ॥ राजा जो थांरा सेज

में है क्रोध, उनकी गैल जी । ताकत नहीं आकर वहां दुसरी करे को सैल जी ॥ श्रवण द्वारे पोल चोकीदार वहां रह्या टैल जी । तृष्णा तैयारी कर रही लीना हुकम तेरा झेल जी ॥ ११३ ॥

कुमता की तृष्णा से ।

टेर । प्रीतम कें महलां रंग को चांनणो खवर्यां ल्या दासी ।

तृष्णा की कुमता से ।

टेर । अजी हुकम उठाऊं बाई, आपको जल्दी मैं जाऊं ।

कुमता--(दोहा) जल्दी जावो महल में स थे खवर्यां देवो आय । दीखे क्यां को चांनणू स म्हारा रंग महलां के मांय ॥ अये खवर्यां ल्या दासी ॥ १ ॥

तृष्णा—मन में थे धीरज धरो स मैं जाऊँली प्रभात। ढलती मांझल रात बाई मैं ज़ाऊँ किन के साथ ॥ अजी जल्दी मैं जाऊँ ॥ २ ॥

कु०—दिल धीरज म्हारो नहीं धरे स उठे वदन में रीस। अये जल्दी खबर्यां ल्यादे दासी देऊँ तनै वक्षीस ॥ अये खबर्यां० ॥३॥

तृ०—वार वार थे कहो बाई जी हुकम शीश धर लेस्यूं। दिन ऊग्या प्रभात आप नें होसी जैसी कहस्यूं ॥ अजी जल्दी मैं० ॥४॥

कु०—मेह बरसे बिजली खिवें स कोई बोले दादुर मोर। पपैयो पिऊ २ करे स म्हारे उठे वदन में शोर ॥ अये खबर्यां० ॥५॥

तृ०—थे बाई जी बावला सजी क्याने करता रोस। जाऊँ खबर लगाऊँ जल्दी मतना दीजो दोष ॥ अजी जल्दी० ॥६॥

कु०–दासी दोष देऊँ नहीं थानै है कर्मों के अनुसार। दीख्यो दासी चानणूं स म्हारे हुयो कलेजे पार ॥ अये खवर्यां ल्या० ॥७॥

तृ०–कुमता चिन्ता मत करो स थे राखो मन उमंग। जीवराज राजा से आपां करस्यां रलिया रंग ॥ अजी जल्दी० ॥८॥

कु०–दासी देरी मत करे स तू होजा अब तैयार। घणो भरोसो थारो म्हांने क्यूं करती अवांर ॥ अये खवर्यां ल्या दासी ॥९॥

तृ०–ए कुमता बाई जी थारी ड्योढी देखी बन्द। ऐसो सपनो आयो बाई करम होगया मन्द ॥ अजी जल्दी० ॥१०॥

कु०–सपनों काईं आयो दासी तिस को भेद बताओ। सपना हन्दि बातां म्हांने धीर२ समझाओ ॥ अये खवर्यां ल्या दासी ॥११॥

तृ०–सपना हन्दि बात बाई जी म्हां से कही न जाय। कॉई जाणूं कॉई नांवड़े स तू दे म्हारी खाल उड़ाय ॥ अजी जल्दी० ॥१२

कु०–सभी गुना है माफ तुमारा कहो होय सो बात। नहीं चैन पड़े है जीव में कम्पत म्हारो गात। अये खवर्यां ल्या० ॥१३॥

तृ०–बड़ा घरां की बांई परणी ऊचां कुल की ऊँच। आशा, तृष्णा, काम क्रोध का डेरा होगया कूंच ॥ अजी जल्दी० ॥१४॥

कु०–आशा, तृष्णा, दुवध्या, दुर्मत थे चारों मिल जाओ। जीवराज नै फ़सा फन्द में म्हांसे आण मिलाओ ॥ अये खवर्यां ल्या दासी ॥ १५ ॥

तृ०–खवर्यां लाणें कारणें स म्हे होगी सब तैयार। क्रोध पुरुष पहरायत भेजो मती लगाओ वार। अजी जल्दी में जाऊं ॥ १६ ॥

कु०—क्रोध, पुरुष सारे लेवा को इतरो क्राई काम । खबर्यां लेकर जल्दी आओ मैं करस्यूं इन्तजाम ॥ अय खबर्यां ल्या दासी ॥१७॥

तृ०—मैं जाऊं छूं खबर लेण न थे राखो प्रतिपाल । रंग महल के मांय नै स कोई दीस है जंजाल ॥ अजी जल्दी मैं जाऊं ॥१८॥

कु०—श्रवण सुण्यां नयन देख्यां बिन आवै नहीं ईमान । कह्यो सुण्यो मानै मत किसको चुगल वड़ा बेईमान ॥ अये खबार्यां ल्या दासी ॥ १९ ॥

तृ०—होनहार सो होसी बाई जी लिख्या पूर्बला लेख । कह्यो सुण्यो मानूं नहीं किस को आऊं निजर्यां देख ॥ अजी जल्दी मैं जाऊं ॥२०॥१२३॥

॥ वार्ता ॥

तृष्णा कुमता को इस तरह समझा कर जीवराज के महल की तरफ गई। वहां का सारा हाल देखकर वापिस लोट आई। अब जो हाल वहां देखा था उसका वर्णन कुमता से करती है ॥ १३४ ॥

॥ तृष्णा की कुमता से ।

टेर । प्रीत लगाई परनार से बाई प्रीतम थारा ।

कुमता की तृष्णा से ।

टेर । राजन तो साजन म्हारा हो रया ये काई बोल बोलती ।

तृष्णा—प्रीत करी परनार संग वह सुणज्यो बाईराज । श्रवण द्वारे सुणियां रंग का बाजा रया है बाज ॥ अजी बाई प्रीतम थारा ॥ १ ॥

कुमता—श्रवण द्वारा की जो खिड़की किण ने दीनी खोल । नयन वैन और नासिका स जहां पहरा देती पोल । अये काई बोल० ॥ २ ॥

तृ०—पोल बोल वा है नहीं स बाई चोकस चोकीदार । दस इन्द्रिय के द्वारे फिर गई कोई न बूझी सार ॥ अजी बाई प्रीतम थारा ॥ ३ ॥

कु०—ज्ञान इन्द्रिय द्वारे क्यूं जावे है कर्म इन्द्रिय से काम । विषय रूपी वांने भोग भुगावां राखां म्हारो श्याम । अये काई बोल० ॥ ४ ॥

तृ०—हे बाई सांची कहूँ स थे म्हारी वात ल्यो मान । काम, क्रोध, मद, लोभ ने स भेजो अपने धाम ॥ अजी बाई प्रीतम थारा ॥ ५ ॥

कु०-आशा, तृष्णा, दुवध्या, दुर्मत सब मिल चालो साथ । काम, क्रोध मद, लोभ पधारो छुड़ादेओ वीं को साथ । अय काईं वोल० ॥ ६ ॥

तृ०-एक समय वाई वावा जी आयो हो सई शाम । आखी रात राज पर रहग्यो उणरा करिया काम । अजी वाई-प्रीतम थारा ॥ ७ ॥ १४१ ॥

वार्ता ।

कुमता वावा जी के आने की वात सुन कर अपने प्रधान मन से पूछती है । उसके पूछने पर मन का खबर करते हुए लोभी से वार्तालाप करना ॥ १४२ ॥

मनका लोभी से ।

रेखता ।

टेर । लोभी तूं यो कांईं कीनो जोगी न आवण क्यूं दीनूं ।

लोभी का मन से ।

टेर । जोगी एक जुगती से आये
लोभी मैं लोभ में छायो ॥

मन--हाथां कर्या है काम नहीं है दो
जो उन में । काया जो गढ़ का द्वार दीनि
खोल जो दिन में ॥ जल्दी गयो मुनिराज
प्रसन्न होवतो मन में । जाके कियो उपदेश
दीनूं ज्ञान जो छिन में ॥ लोभी तू० ॥ १ ॥

लोभी--असली जो साधू सन्त घर
डोलता नाहीं । दीख्यो बनावट भेष कुटम्ब
पालने ताहीं ॥ छायो मैं मोह के मांय-जोगी
देवशी कांई । मैं जो कह्यो मुनिराज जावे
महल के मांहीं ॥ जोगी एक जुगती से० ॥ २ ॥

मन--कैसे चलाऊं ज़ोर सुमता संग में
ल्याया । नीकी जो धीरजशील मुझको खूब

धमकाया ॥ क्षमा गम जो भाव जोशी वेग
श्रण आया । सुमता को करियो व्याह मैं तो
क्रोध में छाया ॥ लोभी तू यो कांई० ॥ ३ ॥

लोभी–चालो जो अब सब संग जल्दी
जीव ने घेरां । गेरां चोरासी मांय फिरावां
खूब जो फेरा ॥ तुम थे वहां प्रधान कुछ
नहीं दोष है मेरा । जोगी किया उपदेश
चला नहीं जोर क्या तेरा । जोगी एक
जुगती ० ॥ ४ ॥

॥ मन–कुमता तू सुण ले बात तेरा श्याम
पे जाओ । उनसे करो तुम प्रेम उनको खूब
विलमाओ ॥ सजल्यो सभी सिणगार सुन्दर
नार बणजाओ । जाके करो तुम प्यार मदन-
राज चेताओ ॥ लोभी तू यो कांई कीनो०
॥५॥१४७॥

कुमता की जीवराज से।

राग (मोहनी) रागनी।

टेर । छोड़्यो सुमता को तुम प्यार नार मैं हाजिर हूँ दिलदार ॥

जीवराज की कुमता से।

टेर। मिली मुझे आज नार निज सार होवस्यां भवसागर से पार ॥

कु०-(दोहा-चलत) पिया मैं अर्धाङ्गिनी थारी, हुकम में हाजिर हूँ प्यारी। पिया मुझे कीनी क्यूं न्यारी, आपने या कांई दिल धारी ॥ पिया मुझे क्यूं छोड़ी मझधार । नार मैं हाजिर हूँ दिलदार ॥ १ ॥

जी०-सुमत नहीं छोडूँ हे दिल जान, वधासी दुनियां में म्हारो मान । चली जा

हट यहां से अज्ञान, संग लग हुयो वहुत हैरान ॥ रह्यो मैं वहुत तेरे आधार ॥ होवस्यां भवसागर से पार ॥ २ ॥

कु०-पिया म्हा से प्रीति पूर्वली पाल, शौक न थोनी तुरत निकाल । भूप तू चाल हमारी चाल, संग मैं हूं थांकी भोपाल ॥ कुमति कहे मन में बात विचार ॥ नार मैं हाजिर हूं दिलदार ॥ ३ ॥

जी०-करूं नहीं तेरा अब मैं संग, किया तू मान मेरा सब भंग । मेरा जी चाहता था सत्संग, चढ़ाती विषय भोग तू रंग ॥ मुझे नहीं तेरी अब दरकार । होवस्यां भवसागर से पार ॥ ४ ॥

कु०-विषय का भोग भोग प्यारा, भोग से क्यूं होता न्यारा । कामवश है सब संसारा, कहा तू मान पीव म्हारा । आपन

समझाऊं हरवार ।। नार मैं हाजिर
दिलदार । ५ ॥१५२ ॥

जीवराज की कुमता से ।

टेर । कुमत नही धारां हे म्हाने मि
गई सुमता नार ॥

कुमता की जीवराज से ।

टेर । सुमत मत धारो जीं पिव मैं
हाजर सुन्दर नार ॥

जी०—(चौक) पहली थारी म्हाने
पूरी पड़ि नहीं पाहिचान । मिठा वचन बोलतं
बाहर अन्दर कपटी खान ॥ थारी प्रीत
ऐसी है कुमता झाडी बोर समान, । लाली
दीखे दूरसे सजी मांही कठिन कृपांण, कुमत
नहीं धारां हे० ॥ १ ॥

कु० कड़वा वचन बोलो मत प्रीतम
हो थे म्हारा साथी । कोई समय में दीपक

बणग्यां में वणं बैठी बाती ॥ क्रोध रूपी तेल-पूरियो लोभ सदा को साथी । माया रूपी बाज्यो वायरो में थामें मिल जाती ॥ सुमत मत धारो जी० ॥ २ ॥

जी०-माया के वशीभूत रह्यो तू खूब नचायो नांच । झूंठा वचन सदा से भाषे कदे न बोले सांच ॥ संपति नें सपने नहीं चावे ज्यों कञ्चन न काच । जिधी, वदि सर्व सहेली में लीनी है जाच ॥ कुमत नहीं धारां हे० ॥३ ॥

कु०-जिद्दी, वदि नहीं आज की रहे सदा से साथ । हरदम हुकम उठावे थांको हाजिर रहे दिन रात ॥ कांई चूक पड़ी है यां की कह्यो सांची बात । हाथ जोड़ हाजिर खड़ी स मैं चरणां नमाऊ माथ ॥ सुमत मत धारो जी° ॥ ४ ॥

जी०–मत न बात वणावे तेरी मेरे नहीं दरकार । अब मैं नेह लगाऊं नाहीं तू है नागिनी नार ॥ ऐडी से चोटी तक थामें पूर्ण भयो विकार । स्पर्श संग करे कोई थारो जावै नरक द्वार । कुमत नहीं धारां हे० ॥ ५ ॥

कु०–स्वर्ग निशानी कठिन पीव जी नहीं आपणो काम । लख चौरासी मांयने स सामिल रहस्यां श्याम ॥ मोहराजा को ध्यान लगाओ मत कहो मुख से राम । चलणूं है यमराज द्वार नहीं और से काम ॥ सुमत मत धारो जी० ॥ ६ ॥

जी०–यमराज राजा के आगे है दुष्टां को काम । खोटा कर्म कुमावे नितका लेवे न हरका नाम । सत्य शास्त्र राम-भजन में धरे पलक नहीं ध्यान । आखिर द्वारे जासी यम के लुच्चा बेईमान ॥ कुमत नहीं धारां हे० ॥ ७ ॥

कु०—थे तो राजन् वात वणाओ मैं छूं भोलीनार । यमराज राजा को म्हारे पूरो ही आधार ॥ काम, क्रोध, मद, लोभ आदि सब राखे म्हारी सार । ऐसो जाल रचूंली प्रीतम नहीं छोडूंली लार ॥ सुमत मत धारो जी० ॥८॥

जी०—जाल रचो जंजाली जीव पर सुण कुमता म्हारी वात । सुमता न धारण करी स नहीं थारो म्हार साथ ॥ नीच निवास करो थे जाकर उत्तम म्हारी जात । थारे म्हारे वणे न कुमता सांच कही मैं वात ॥ कुमत नहीं धारां हे० ॥६॥

कु०—दुत्कारा मत देवो प्रीतम दौड़ लार नहीं आई । भरी सभा मांय न स मैंने पंचा में परणाई ॥ कह तो प्रीतम समझ लेवो स नहीं लेस्यूँ पंच वुलाई । पंच करे सो होसी प्रीतम नही होवे मन चाही ॥ सुमत मत धारो जी० ॥१०॥

जी०–पंच बुला पंचायती स थारी म
चावे सो कीजे। विजनस थान छोड़ दे
म्हारी सत्य बात सुण लीजे॥ करणी थारी
देख के स तू दोष कर्म न दीजे। मतना बात
बणावे यहां पर मार्ग जल्दी लीजे॥ कुमत
नहीं थारां हे० ॥११॥ १६३॥

कुमता की जीवराज से।

(राग–पणिहारी)

टेर। हाथ जोड़ अर्जी करूँ जी पिय
प्यारा जिवराज। म्हानै करल्यो जी अंगीका
प्यारा जी॥

जीवराज की कुमता से।

टेर। बहुत दिनां तक भरमियो प्यार
थारी मे लार। तू होगई कमसल नार
प्यारी जी॥

कु०—कमतल न असली करो जी हाजर हूँ मैं तावेदार। त्यागो तो मरूँ खाय कटार॥ प्यारा जी ॥१॥

जी०—त्यागन मैं बिलकुल करी ये सुणले मेरी बात। खाय कटार मरे वेगम जात॥ प्यारी जी ॥२॥

कु०—ईस्क कटारी म्हार मार ज्यो जी म्हानै रह्यो है ऊमंग। सेजा में रचावो पिया रंग। प्यारा जी ॥३॥

जी०—क्यूं ललचावे थारा जीव नये सुण कुमता ये नार। लेवोनी शील ब्रत धार। प्यारी जी ॥४॥

कु१—शील ब्रत तो ना नीम्हजी जोवन छक्यो दिलदार। म्हारी छतीयां पकी ज्यूं अनार। प्यारा जी ॥५॥

जी०--सेजा न आऊँ थारी कामणी ये त्याग्यो तेरो ये संग। हुयो म्हार सुमत को प्रसंग। प्यार जी ॥६॥

कु०--सुमत का प्रसंग से जी नहीं राचे पिया रंग। चालो सेजां में लगावो म्हानै अंग। प्यारी जी ॥७॥

जी०--वात वणा कर बोलती ये रे तू भूंडी ये नार। करूं नहिं थांसे प्यार। प्यारी जी ॥८॥

कु०--समझाया समज्या नहीं जी करूँ और उपाय। जाऊँ लेस्यूं पंच बुलाय। प्यारा जी ॥९॥ १७२॥

कुमता की निन्दक नाई से।

टेर। निन्दक जा नाई ल्यावो पंचा नै वेग बुलाय वो ॥

निन्दक नाई की कुमता से।

टेर। कांई दुख वीत्यो कुमता आप में क्यूं पंच वुलावे ॥

कु०—(दोहा) जल्दी पंच वुलाल्या निन्दक मती लगावे वार। जीवराज जी पती है म्हारो परणी दूजी नार। घर के वाहर करदी मुझको किसके रहूँ आधार। अरज करूँ छूं निन्दक थान जल्दी ल्यावो लार॥ निन्दक जा नाई० ॥ १ ॥

नि०—मैं नहीं देर लगाऊं वाई जाऊं अव की स्यात। परणी दूजी नार राज नें कांई उसकी जात ॥ चात्रक चतुर नार नें त्यागी वह नहीं सोची वात। थांके वांके प्रेम घणूं हो हरदम देख्या साथ। क्यूं पंच वुलावे ॥ २ ॥

कु०--मैं भोजन त्यारी करूँ स थे ल्यावो वेग बुलाय । वह जीमे जो भोजन औरूँ सीधो लेऊँ सॅगाय ॥ करज्यो यतन जुगत से लाज्यो कहूँ थाने समभाय । हाल हकीकत समभावानें सुमत देवो हटाय ॥ निन्दक जा नाई० ॥ ९ ॥ १८१ ॥

निन्दक नाई की पंचों से ।

टेर । कुमता बुलावे थानै वेग हो पंचों सब चालो ॥

पंचों की निन्दक नाई से ।

टेर । कांई कुमता के पडियो काम जी म्हान वेग बुलावे ॥

नि०-(दोहा) कुमता माहीं कष्ट पड्यों है झट सारा मिल चालो । देर हुयां से पंचा वा पीजाय जहर को प्यालो ॥ अजी पंचों सब चालो ॥ १ ॥

पं०–क्यूँ पीवे वा प्यालो जहर को जिस का भेद बताओ ॥ जल्दी हाल सुणादे नाई काई कारण आयो ॥ क्यूँ वेग बुलावे ॥२॥

नि०–जीवराज नगरी को राजा परणी दूजी नार। कुमता में वो ऐसी कीनी छोड दई मझधार॥ अजी पंचों सब चालो ॥ ३ ॥

पं०–कुमता की कांई चूक हुई क्यूं परणी दूजी नार। यो ही अचंभो आयो म्हाने कैसे टूट्यो प्यार ॥ क्यूं वेग बुलावे ॥४॥

नि०–वेग पधारो पंच लोग थे पूरी करल्यो जांच। कुमता में कोई चूक नहीं है सुणज्यो म्हारी सांच ॥ अजी पंचों सब चालो ॥ ५ ॥

पं०–कुमता के तो कारणे स म्हे होग्या सब तैयार। कुमता को वहां राज जमावां करां सुमता न पार ॥ क्यूं वेग बुलावे ॥६॥१८७॥

कुमत थे धरयो थैली आन ॥ वाई म्हे राखां थारो मान ॥ ५ ॥

कु०-लियां मैं थैली ऊवी त्यार । पेट भर ले ल्यो पांच हजार ॥ देवो थे सुमता तुरत निकार । लोभचंद मैं थांके आधार ॥ वधाओ वेटी वेचको मान ॥ राज न समझायो सुरज्ञान ॥ ६ ॥

पं-जावो थे धोकादार प्रधान । ल्यावो थे जिवको करके मान ॥ बिगाडां पूरी वांकी श्यान । कुमत न करां फेर प्रधान ॥ सूंक दी लीनूं कहणो मान ॥ बाई म्हे राखां थारो मान ॥ ७ ॥

कु०-शिकार थे ताजा वनवाओ । अजी मध्य का प्याला जी पाओ ॥ जीव न गहरो विलमाओ । चंद्र थे पूरण ही पाओ ॥ रचो थे

जाके जाल सुग्यान ॥ राज न समझायो सुरज्ञान ॥ ८ ॥

पं०—नशो म्हे पूरण ही पावां । जिव न खूब ही बिलमावां ॥ राचसी खाना खुवावां। संग में जीव लेर आवां ॥ रचां म्हे जाकरके तोफान ॥ थाई म्हे राखां थारो मान ॥ ६ ॥ १९६॥

घोकादार की जीवराज से ।

टेर । पधारो जीवराज-महाराज । आप न पंच बुलावे आज ॥

जीवराज की घोकादार से ।

टेर । पंच म्हांने कांई कहवे आज । पड्यो है म्हां सा रूँ कांई काज ॥

धो०-(रेखता) मोटो पड्यो है काम कहूँ मैं आपके तांई । जल्दी बुलावे पंच

चालो आप ज्यों वांई ॥ मतना लगावो देर होल्यो संग के मांही ॥ पधारो जीवराज० ॥ १ ॥

जी०--दूरा खड़ा क्यूँ आप मेरे पास में आओ । कांई पड्यो है काम सब तुम हाल समझाओ ॥ कैसा जरूरत काम मुझको भेद बतलाओ ॥ पंच म्हांने कांई क० ॥२ ॥

धो०-पायो न पूरो भेद सुणल्यो बात जी म्हारी ॥ आप पधार्यां राज होसी हाल वहां जारी ॥ सब ही विराज्या पंच देखे बाट जो थांरी ॥ पधारो जीवराज महाराज० ॥३॥

जी०-चालो पधारो आप जरा मैं देर से आऊँ । नहीं लगाऊं वार हुकम आपका पाऊँ ॥ वेगा सिधाओ आप मैं तो तुरत ही आऊँ ॥ पंच म्हाने कांई० ॥ ४ ॥

धो०–चालो जो म्हारी संग जरूरत आप की भारी । देरी का कुछ नहीं काम सुणल्यो अर्ज या म्हारी ॥ सब ही विराज्या पंच है अब देर वहां थारी ॥ पधारो जीवराज महाराज० ॥ ५ ॥

जी०–मैं जो हुयो तैयार लारे आपकी चालूँ ॥ करसी दया गुरू राज कुमता दूर ही टालूँ ॥ चन्द्र कहे कर जोड़ गुरू ने शीश निवाल्यूँ ॥ पंच म्हाने कांई० ॥६॥२०२॥

जीवराज की पंचों से ॥

टेर । हाजर मैं उवो तावेदार जी पंचा कांई कहवो ।

पंचों की जीवराज से ।

टेर। कांई मस्तानी छाई आपनें कुमता क्यूँ त्यागी ॥

जी०–(दोहा) नहीं मस्तानी छाई म्हाने सुणो पंच प्रधान । कुमता के मांयँ ने सजी

रह्यो न म्हारो मान ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥ १ ॥

पं०--कुमता नहीं है आज की स कोई रहे सदा से लार । कांई चूक पड़ी इण मांहीं घर से दीई निकार ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥ २ ॥

जी०--इसका अवगुण सायर जाणे है जो छल की खान । स्पर्श संग करे कोई इण से रहे न उनमें ज्ञान ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥ ३ ॥

पं०--कुमता परणी नार आप की इसमें कुछ नहीं चूक ॥ सुमता को संग हुयो आपके गया हो तन से सूक ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥ ४ ॥

जी०--कुमता को संग रहो हमारे जब तक रह्यो विकार ॥ सुमता को संग हुयो

हमारे दियो ज्ञान तत्सार ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥ ५ ॥

पं०—मतना वात वणाओ थे,तो वैठो म्हांकी पास ॥ मन इच्छा होवे सो कहवो पूरां थांकी आस ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥ ६ ॥

जी०—पास खड़ा हूँ आपके सजी कहो होय सो वात ॥ या तो विजनस धारली स मैं रखूँ न कुमता साथ ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥ ७ ॥

पं०—आपस में समझावां थान सुणो हमारी वात । जाय पुकारे राज में स कोई या तिरिया की जात ॥ अजी कुमंता क्यूँ त्यागी ॥ ८ ॥

जी०—इसका लक्षण सव ही जाणें राज सभा दरबार ॥ कुमता है या बुद्धिहीन कोई

ना कोई सुणे पुकार ॥ अजी पंचां कांई
कहवो ॥ ९ ॥

पं०—धोखादार जी आप पधारो ल्यावो
नशो तैयार । घणां दिनां से मिल्या राजवी
खूब करां मनवार ॥ अजी कुमता क्यूं
त्यागी ॥१०॥

जी०—नशो म्हे कोई करां न पंचां लेली नशा
आण । ज्यादा झोड़ करो मत पंचां राखूं
थांकी आण ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥११॥

पं०—सोगन अपणे ना निभे स थे सुणो
राज सुरज्ञान । सबके माहीं शिरोमणि जाण
राखां थांको मान ॥ अजी कुमता क्यूँ त्यागी॥१

जी०—पंचां न्याव करो नहीं सत् क
राखो पक्षपात । झूंठ कपट के मांय न र
बिगड़गई सब जात ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥

पं०—पक्षपात की वात नहीं है सुणज्यो चित्त लगाय । कुमता न धारण करो स म्हे करस्यां थांकी साय ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥१४॥

जी०—पंचां थांको जगत में स जी दिन २ घटसी मान । सत की वात छोड़ दी जद से होगया थे अज्ञान ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥१५॥

पं०—म्हे तो चालां रीत आगली परा-परी की चाल । परणी तो छूटे नहीं स कहे लोभचन्द का लाल ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥१६॥

जी०—सत न असत करो थे पंचां बुद्धि भ्रष्ट हुई थारी । कुमता लार लगा के जग मे खोवो इयान क्यूं म्हारी ॥ अजी पंचां कांई ॥१७

पं०—लापरचंद जी पंच बोलिया सुणो गपोड़ी वात । समझायो समझे नहीं मूरख

करयो कुमता साथ॥ अजी कुमता क्यूँ
त्यागी ॥१८॥

जी०—खोटा २ न्याव करो थामें भय
कपट को मैल। तेली के घांणी फेरो अब वे
बणस्यो बैल॥ अजी पंचां काईं कहवो ॥१६

पं०—होसी सो हो जावसी स थे
ल्यो म्हां की मान। मोह पिता कुमता के
कहिये पाड़े थांकी श्यान॥ अजी कुमता क्यूँ
त्यागी ॥२०॥

जी०—पंचां न्याव करो थे संत को मर
ओढो शिर पाप। कीट पतंग बणों ला पंच
जंगल होस्या सांप॥ अजी पंचां काईं कहवो॥

पं०—जीवराज जी भोला दीसो कुण जाणे
काईं होसी। म्हे पंच प्रधान कहवां वो करल्य
सो सई होसी॥ अजी कुमता क्यूँ त्यागी॥२

जी०--सुमता शीतल चन्द्रमा स जी कुमता है खद्योत । पंचां न्याव करो नहीं सत को क्यूं करता अनहोत ॥ अजी पंचां कांई कहवो॥२३

पं०--कुमता न धारण करो स थे सुमत न द्यो दुहाग । उसने हुक्म देवो थे जाकर उड़ा महल का काग ॥ अजी कुमता क्यूं त्यागी ॥२४॥

जी०--पंचां हुकम उठाऊँ थांको थे होस्यो पाप का भागी । कुमता चाल चले नहीं सत की फेर त्याग द्यूं आगी ॥ अजी पंचां कांई कहवो ॥२५॥ २२७॥

ज्ञानप्रकाश

अर्थात्

जीवराज का मुक्तिगमन

प्रथम भाग समाप्त ।

--:*:--

श्रीः



❀ज्ञान-प्रकाश❀

अर्थात्

जीवराज का मुक्ति गमन।

दूसरा भाग।



जीवराज का विलाप।

टेर। नाथ! मेरा वृथा है जीना कहन मैं पंचां का कीना। कुमत मिल जाल जो रच दीना। पंच मुझे बहका जो लीना। नशा के वशीभूत कीना। वचन में मुझे बांध लीना। (उड़ाण) वचन तज्या में ज्ञान का झूंठ किया आ वास। वचन निभाओ आप

हरिजी सुमता राखो पास ॥ आपका शरणां मैं लीना ॥ कहन मैं पंचां का कीना ॥ १ ॥ नाथ मैंने अब सुध बुद आई सुमता न कहूँ जार काईं, दोष कुछ सुमता में नाहीं दुहाग की वृथा ठहराई। (उड़ाण) नशा हरामी जगत में करता है अज्ञान। सायर तो करता नहीं मूरख राखे मान ॥ इसी का है वृथा पीना। कहन मैं पंचां का कीना ॥२॥ कुमता आ दुख दियो भारी, नाथ वा कमसल है मारी, इसे कोई जो दिल में धारी, बुद्धि सब जावें हैं मारी। (उड़ाण) या कुमता संसार में, है नरकां को मूल। इसकी प्रीत तजो तुम सज्जन, मत करजो थे भूल ॥ मेरा तो है यह ही कहणा ॥ कहण मैं पंचां का कीना ॥ ३ ॥ नाथ मेरी करुणा सुण लीज्यो, सुमत म्हारे हृदय बसा दीजो, दया प्रभु मेरे पर कीजो, ये ही मेरी अर्जि सुण

लीजो। (उड़ाण) आप दयालू जगत में हो सब के प्रतिपाल। कुमता निकट रहे नहीं मेरे दीनानाथ दयाल॥ चन्द्र थांके चरणां चित्त दीना ॥ कहन मैं पंचां का कीना ॥ ४ ॥ २३१ ॥

जीवराज का
शेर।

सुमता तू सुण ले सुन्दरी दीनो है थाने दुहाग जी। जावो हमारे महल पर ठाड़ी उड़ावो काग जी॥ पंचां करी पंचायती कुमता को कीनू आग जी। तेरा नहीं कुछ दोष सुमता मन्द मेरा भाग जी॥ २३२॥

सुमता का
शेर।

कहती मैं प्रीतम आप से उदय हुया है भाग जी। जाऊँ तुम्हारे महल पर कुबुद्धि उडाव्यूं काग जी॥ ऐसे विरोधी पंच जैसे स्वान असली काग जी। सोवो क्यूँ मोह की नींद प्रीतम होश कर अब जाग जी॥२३३॥

जीवराज की सुमता से।

टेर। जाओ उड़ाओ सुमता काग ये सुन्दर महलां का ॥

सुमता की जीवराज से।

टेर। जाऊँ उड़ाऊँ कुवुधि काग जी प्यारा महलां का ॥

जीव०—(दोहा) शिखर महल पर सुन्दर थे तो जाय उड़ाओ काग। पंचां का कहना स मैं तो दिनूँ थानै दुहाग (झेला) दीनूँ थांनै दुहाग झूंठ मत जाण ज्यो। कुवुद्धि रूपी काग महल का ताड़ज्यो॥ सुन्दर महलां का ॥ १ ॥

सुमता—त्यागो मत थे सायवा स जी ल्यो निज मन से धार। मैं अर्धाङ्गी सत्य की सजी हूँ पतिव्रता नार (झेला) हूँ पतिव्रता नार शरण पिव की रहूँ। दुख सुख

एक समान सत्य थानै कहूँ ॥ प्यारा महलां का ॥ २ ॥

जीव०—पतिव्रता का कैसा लक्षण मुझ को भेद बताओ । पतिव्रता की हाल हकीकत धीरै २ समझाओ । झेला । धीरै धीरै समझाओ झूंठ मत बोल ज्यो । सच्चे कांटे तोल बात फिर खोल ज्यो ॥ सुन्दर महलां का ॥ ३ ॥

सुमता—उत्तम पतिव्रता का मैं अब तुम से करूँ बयान । जाग्रत सपना मायँ नै स्त्री और पुरुष नहीं जाण ॥ (झेला) और पुरुष नहीं जाण ध्यान पति को धरे । ऐसी होय जो नार कारज उनका सरे ॥ प्यारा महलां का ॥ ४ ॥

जीव०—मध्यम का थे हाल सुणाओ नीती के अनुसार । रहणी करणी सब सम-

ओ कैसा करे विचार। (झेला) कैस
विचार प्रीत कांई पालती। कैसा उसका
चाल कांई चालती॥ सुन्दर महलां
॥ ५ ॥

सुमता–मध्यम का जो हाल सुणाऊँ
ज्यो चित्त में ध्यान। आण पुरुष न ऐसे
मझे पिता पुत्र समान (झेला) पिता
समान चाल सत की चले। और नहीं
ई दोष कर्म गति ना टले॥ प्यारा महलां
॥ ६ ॥

जीव०–कनिष्ठ का थे हाल सुणाओ
ई उसकी रीत। वो पतिव्रता कैसी कहिये
स विधि जाने जीत (झेला) किस विधि
वे जीत जगत के मांय नै। रहती निच्त
दास कहो कांई कारणै॥ सुन्दर महलां
॥ ७ ॥

सुम०--कनिष्ठ का मैं हाल सुणाऊँ सु
ज्यो चतुर सुजान । धर्म विचार रहे जग मां
राखे कुल की काण । (झेला) राखे कुल
काण लाज के कारणै । रहति नित्तउदास मो
पद धारणै ॥ प्यारा महलां का ॥८॥

जीव०--अधम पतिव्रता कैसी कहि
उसका हाल सुणाओ । कांई वा व्रत नेम
भावे मुझे आप समझाओ । (झेला) मु
आप समझाओ लघु वा जात है ॥ कैसे पा
धर्म सही कांई वात है ॥ सुन्दर महलां का

सुमता--अधम पतिव्रता का जो मैं
को हाल सुणाऊँ । भय विचार रहे दुनियां
इसका भेद बताऊँ । (झेला) इसका भेद बता
रहे जग लाज से । कड़वा बोले बोल रहे न
प्यार से ॥ प्यारा महलां का ॥१०॥

जीव०--वो तिरिया है कौनसी स
सुणज्यो चात्रक नार । निज पति नै छोड़

रे और संग प्यार। (झेला) करे और संग
ार कुटम्ब नहीं धारती। चाले टेढ़ी चाल
ज़ारा मारती ॥ सुन्दर महलां का ॥११॥

सुमता—वो नारी व्यभिचारण कहिये
णजो चित्त लगाय। निज पति नै छोड़ के स
कुकर्म करती जाय। (झेला) कुकर्म करती
ाय क कमसल नार हे। मात पिता और
से बहुत धिक्कार है॥ प्यारा महलां का ॥१२

जीव०—कहाँ तलक धिक्कार देवो ला
सी बहुत है नार। अपना पति न मार के स
सती होणन त्यार (झेला) सती होणन
ार दगावा दार है। मन मे रही उमंग
ौर संग प्यार है ॥ सुन्दर महलां का ॥१३॥

सुमता—नारि न कांई दोष देवो है मात
ता की भूल। बालपने विद्या नहीं देवे रहा
ोभ में झूल। (झेला) रहा लोभ में झूल माया

के कारणै । लावे बूढ़ो बींद क अपने बार
प्यारा महलां का ॥१४॥

जीव०–माता पिता अज्ञान फिर है
राजा की भूल । वस्ती को इन्तजाम
है रहैमद में झूल (झेला) रहै मद में झूल
की बात है । गिरे अधूरा गर्भ राज शिर
है ॥ सुन्दर महलां का ॥१५॥

सुमता–राजा खुद विद्वान् होय तो
प्रजा की सहाय । उसी राज के मांय
कोई होय नहीं अन्याय (झेला) ह
नहीं अन्याय के प्रजा कांपती । सभा
नर नार रीत से चालती ॥ प्यारा मह
का ॥ १६ ॥

जीव०–सतवादी राजा होवे स
प्रजा ही सत होय । वेदां की सेवा
स जामें ज्ञान सवायो होय । (झे

जामें ज्ञान सवायो होय सत से चालतां।
प्रजा नै निज वेटा वेटी ज्यूं जाणता॥
सुन्दर महलां का ॥ १७॥

सुमता-राजा की या भूल सही है, है पंचां की चूक। सभी जात का पंचां सुणज्यो कन्या की एक कूक (झेला) कन्या की एक कूक चित्त में धारज्यो। जोडी को वर देख इसे परणाय ज्यो॥ प्यारा महलां का॥ १८॥

जीव०-पंचां का तो न्याव नै स माने राज सभा दरबार। पूरी यांकी भूल है स ये करे न बात विचार॥ (झेला) करे न बात विचार जीमण के कारणे। बेटी वेचर खाय जाय जीरे बारणे। सुन्दर महलां का ॥ १९॥

सुमता-हाथ जोड सुमता कहे स थे पंचां धर ज्या ध्यान। कन्या थाने अरज

करी है राखो उणरो मान (झेला) राखो उणरो मान विद्या घर ल्यावज्यो । घर का लोभी होय बात मत मानज्यो ॥ प्यारा महलां का ॥ ३० ॥

जीव०--नशो करा कर पंचां म्हारो डिगा दियो इमान । सुमता थानें दुहाग दिरायो खोटा किना काम ।(झेला) खोटा कीना काम प्रीत थे पाल ज्यो । कहते चन्द्र-लाल सुमत न धारज्यो ॥ सुन्दर महलां का ॥ २१ ॥ २५४ ॥

सुमता की ।

(लावनी)

नशा करो तो करो ज्ञान का और नशा हैराना है । सत्य नाम का नशा करो पिव ये ही हमारा कहना है ॥ (चोक) हे पिव ऐसी सोच दिवाना सराब वृथा पीना है । मूरख पीवे द्रव्य गुमाने जगत में लोग हंसाना है ॥

...त मन में जरा होश नहीं रहता बकता फिरे
...दिवाना है। गिरे धराणि पर चक्कर खाकर
... मुख मिट्टी लिपटाना है ॥ जात न्यात और
धर्म कर्म का रहता नही ठिकाना है। सत्य
नाम का नशा करो पिव ये ही हमारा कहना
है ॥१॥ अमलदखल करती है अपना खोटा
इस का खाना है। रमे इसी का असर जि-
गर में फिर पीछे पछिताना है ॥ दूखे नश २
करता खश २ खोटा इसका खाना है। नही
नींद और झरे नाक विन सोचे दुख उठाना
है ॥ चात्रक नर छूए नहीं इसको विषधर
...ष ज्यों जाना है। सत्यनाम का नशा करो
...व ये ही हमारा कहना है ॥२॥ गांजा सु-
...का खांसी खुर्रा दिल के मांही जमाना है।
...गर जलाना खून सुकाना दम का और
...ना है॥ चंडू पी कोकीन जगत मे अपनी
...न गुमाना है। सत्य नाम का नशा जगत

में रखे सदा मस्ताना है ॥ चन्द्र कहे हरि भजो पार भवसागर से तिरजाना है । सत्य नाम का नशा करो पिव ये ही हमारा कहन है ॥३॥ २५७ ॥

फिर सुमता की बारामासी ।

राग-शेखावाटी ।

टेर । पिया सत से चालो सत से थे चाल असत्य मत भाष ज्यो । (चोक) चैत हेत कीनों नहीं हर से पिया पायो दुःख अपार । लख चौरासी भरमत २ पायो मनुष्य अवतार । (झेला) पायो मनुष्य अवतार डाव मत चूकज्यो । सत्य गुरां को बचन आप मत भूल ज्यो ॥ पिया सतसे० ॥ १ ॥ बैसाख महिनो लागियो स पिव तज पर-नारी संग । परनारि का संग से स जी होत ज्ञान में भंग ॥ (झेला) होत ज्ञान में भंग

मान जिनका नहीं। लख चौरासी मांय फेर जावे सही॥ पिया सतसे चालो० ॥२॥ ज़ेठ जुगत कर जीवो जगत में सत को थम्भ आधार। पतिव्रता प्रीतम की प्यारी रखे पीव संग प्यार। (झेला) रखे पीव संग प्यार ध्यान पिव को धरे। निज मन इच्छा होय कारज उनका सरे ॥ पिया सत से० ॥ ३ ॥ अषाढ़ आशा लगी हमारे श्याम मिलन के काज। तन मन धन अर्पण करूँ स म्हारी सुध लीज्यो महाराज ॥ (झेला) सुध लीज्यो महाराज मैं शरणे आपके। नाव पड़ी मझ-धार पारकर आय के ॥ पिया सत से० ॥४॥ सावण सुगन हुआ शुभ म्हाने कटे चौरासी जाल। सब थे ध्यान लगाज्यो हरसे तरुण वृद्ध और बाल ॥ (झेला) तरुण वृद्ध और बाल चाल सत की चलो। झूंठ कपट द्यो छोड़ होय थांको भलो ॥ पिया सत से

चालो० ॥ ५ ॥ भादू भरम मिटायो मनको सब सुणज्यो नर नार । दया धर्म और शीलता स पिव ल्यो धीरज नै धार ॥ (झेला) ल्यो धीरज ने धार मारग यो जोग को। है सूरां को काम नहीं कोई और को ॥ पिया सत से चालो० ॥ ६ ॥ आसोज महीने चली मिलन को सुरतनुरत के पास। हरदम ध्यान धरे वह पिव को सुमरे सांस उसास ॥ (झेला) सुमरे सास उसास मिलावे श्याम से। नहीं और से काम प्रेम म्हारो राम से ॥ सत से चालो० ॥ ७ ॥ काती साथी हो सत सखियां खेलां चोसर सार। संसार सागर विषम है तिरणूं किस विध उतरां पार ॥ (झेला) किस विध उतरां पार मांव निज सार है। पासा है निज ज्ञान और जंजाल है ॥ पिया सत से चालो० ॥ ८ ॥ मगसिर मोक्ष होय इस जिव की ल्यो सत संगत धार । काम क्रोध

मद लोभ कुमत और ल्यो ममता नै मार॥ (झेला) ल्यो ममता नै मार शीलता धार ल्यो। दया धर्म ल्यो संग जगत से तार ल्यो ॥ पिया सत से चालो० ॥ ९ ॥ पोष होश करेल्यो तुम सारा क्यूं सूता मोह की नींद। काल शिराणैं यूं खडो स ज्यूं तोरण आयो बींद (झेला) तोरण आयो बींद बीनणी मालसी। जैसे ही जम आय क फांसी डार सी ॥ पिया सत से चालो० ॥ १० ॥ माह महीने माता का गर्भ में कीनूं कोल करार। नीचे शीस पेर ऊपर को पायो कष्ट अपार ॥ (झेला) पायो कष्ट अपार उदर मे झूलियो। भजस्यूँ बारंबार कोल थे यूं कियो ॥ पिया सत से चालो० ॥ ११ ॥ फागन फेरा फिर्या घणां पिव ल्यां चौरासी जीत। आंबो हिल मिल ध्यान लगावां चालां सत की रीति ॥ (झेला) चालां सत की रीत प्रीत

ये पाल ज्यो। कहवे चन्द्रलाल मोक्ष पद धार ज्यो ॥ पिया सत से चालो० ॥१२॥२६९॥

वार्ता।

सुमता को जीवराज ने–पंचों को वचन दे दिया था–इस कारण दुहाग दे दिया।

सुमता का सब तरह विचार कर लेने पर चोकस चारण को अपने पिता के पास भेजते हुए वार्तालाप करना ॥ २७० ॥

सुमता की चारण से।

राग–परवाना

टेर। चोकस चारण का दीजे परवानूं म्हारो जाय वो ॥

चारण की सुमता से।

टेर। सुमता सुण बाई देस्यूं परवानूं थारो जाय जी।

सुम०–सिध श्री सर्वोपमा स जी शील नगर है धाम। ज्ञान राज जी पिता हमारा

कह दीज्यो प्रणाम ॥ चोकस चारण का० ॥ १ ॥

चा०--ले परवाना बाई थारा शील नगर नै जाऊँ । ज्ञान राज राजा जी नै बाई कांई हाल सुणाऊँ ॥ सुमता सुण बाई० ॥ २ ॥

सु०--अरे म्हाने चोकस चारण का दीनूं है पीव दुहाग ॥ शिखर महल कै गोखड़े जी खड़ी उड़ाऊं काग । चोकस चारण का० ॥३॥

चा०--किस कारण थे काग उड़ावो कांई मैं हाल सुणाऊँ । हुकम देवो तो बाई म्हारा लारां लेतो आऊँ ॥ सुमता सुण बाई० ॥ ४ ॥

सु०--चारण चिन्ता है नहीं स वो है सुक्ष्म की बात । नेम हमारो भाई कहिये लेता आज्यो साथ ॥ चोकस चारण का०॥५॥

चा०--थे वाई जी हो सुरज्ञानी करी ज्ञान की वात । नेम कंवर और ज्ञान राज न लेतो आस्यूं साथ ॥ सुमता सुण वाई० ॥६॥

सु०--भाव भतीजो म्हारो कहिये फेरो शीस पर हाथ। गम धीरज नै मिलणा कहिजो सारे ही थे साथ ॥ चोकस चारण का० ॥ ७ ॥

चा०--सत की चाल सदा थे चालो धन जाई थांकी मात। इतरो कष्ट सहन थे कीनो तज्यो नै पिव को साथ ॥ सुमता सुण वाई० ॥ ८ ॥

सु०--वृथा वचन भाखूं नहीं मुख से सही लिखूं समचार । जीवराज काया को राजा धारी कुमता नार । चोकस चारण का० ॥९॥

चा०--सही २ सव जाकर कहस्यूं वाई थारा ये समचार। वार २ मैं मिलणा कहस्यूँ

बाई थारे सार हीं परवार ॥ सुमता सुण बाई० ॥ १० ॥

सु०—पंच करी पंचायती जी कीनूं कुमत को आग। वेगी सुध थे लीजो वावल खड़ी उड़ाऊं काग ॥ चोकस चारण का० ॥ ११ ॥ २८१ ॥

चारण की ज्ञान से।

टेर। ल्यायो परवानुं सुमत कुमार को काया नगरी से।

ज्ञान की चारण से।

कांई परवानूं ल्यायो राजको चोकस चारणका।

चा०—(दोहा०) ल्यायो परवानूं सुमत को स थे सुणज्यो जी महाराज । सुमता वाई शिखर महल का काग उड़ावे आज ॥ कायागढ़का राजा बाई पर होय गया नाराज। बाई थांने याद किया है वेग पधारो राज ॥ अजी काया नगरी से ॥ १ ॥

ज्ञा०—चारण चेतन जीव हो स उन यां कांई कीनी वात। सायर सुमता त्याग के स वो किण संग कीनो साथ ॥ सीख उसी नै दीजिये स जी जिसका उत्तम गात। अज्ञानी नै सीख देवतां अपनी बुद्ध सब जात ॥ अरे चोकस चारण का० ॥ २ ॥

चा०—जीवराज को दोष नहीं है पंच करी अन्याय। सुमता नै वह दुहाग दिरायो करी कुमत की साय ॥ लापरचन्द गपोडी- संख, धोकादार करी अन्याय। कई पंच वहां ऐसा आया बेटी बेचरै खाय ॥ अजी काया नगरी से ॥ ३ ॥

ज्ञा०—मुरख मरम जाणे नहीं उनकी चले परायी सीख। आगे कुमता संग में स वीं घर २ मांगी भीख ॥ फेरूँ जीव बने जंजाली चाल वणावां ठीक। कुमता हठा कर सुमत

अंग में बांधा पकी लीक ॥ अरे चोकस चारण का० ॥ ४ ॥

चा०-होवो म्हारा संग में स जी मती लगाओ देर । वांका अब गुणमाफ करो थे चाल करो झट महर ॥ आप पधार्यां राज-बीस जी होसी उनकी खैर । अब के कुमता काढ्यो स जी नहीं आवेली फेर ॥ अजी काया नगरी से० ॥ ५ ॥

ज्ञा०-चारण चिन्ता मत करे स में चलूं तुमारे संग । अज्ञानी वीं जीव को स जी करां मान चल भंग ॥ कुमता देख ज्ञान को स जी लेसी अपणो मंग । जीवराज नै नेम झिलावां सदा जो रहसी संग ॥ अरे चोकस चारण का० ॥ ६ ॥ २८७ ॥

वार्ता ।

ज्ञानराज शील नगर से आकर पहले जीवराज को समझाता है क्योंकि समझाने

से जीवराज कुमता को निकाल देगा और यह बात सुनकर सुमता बहुत राजी होगी ॥२८

ज्ञानराज की जीवराज से ।

टेर । फेरूँ जंजाली वणियां जीव जी सुमता क्यूं त्यागी ।

जीवराज की ज्ञानराज से ।

टेर । माफ करो जी तकसीर जी हुई भूल हमारी ।

ज्ञा०-- (दोहा) अज्ञानी क्यूँ छाई आपने दीनी सुमता त्याग । वा जो पानै पड़ी आपके खड़ी उड़ावे काग ॥ लख चौरासी कष्ट पावियो अब के जाग्यो भाग, सत्य कहूं सत मान ल्यो स जी द्यो कुमत न त्याग ॥ अजी सुमता क्यूँ त्यागी ॥ १ ॥

जी०--हाथ जोड़ अर्जी करूँ स जी गुन करो सब माफ । सरणे आयो आपके स

नैं होवो दयालु आप । अब के ना विसरूँ
ठा दाता जपूँ आपका जाप । अब थे नेम
झिलाव्यो म्हांने मेटो तीनूं ताप ॥ हुई भूल
हमारी० ॥ २ ॥

ज्ञा०–नेम धर्म झिलाऊँ थानै है अग्नि की
शाख । सदा सत्य भाषण करो स जी झूंठ
मती ना भाष ॥ सुमता है या सुन्दरी स थे
सदा राखज्यो साथ । कुमता न धारण मत
करज्यो यही सत्य की वात ॥ अजी सुमता
क्यूँ त्यागी ॥ ३ ॥

जी०–आज नेम मैं झेलिया स जी
सुणो हमारा नाथ । कदे न त्यागूँ सुमत नैं
स जी रहूँ इसी की साथ ॥ हरदम ध्यान
धरूं हिरदा में जपूँ नाम दिन रात । सुमता
है सत्य सुन्दरी मानी सही मैं वात ॥ अजी
हुई भूल हमारी ॥ ४ ॥

ज्ञा०-अब थे मतना भूलज्यो स अ
नेम कंवर भोपाल। अज्ञानी वह मनुष्य
स जी बहुत बजावे गाल॥ जो सतवा
पुरुष है स वह चले नेम सत चाल। अ
गुरु के कृपा सेती कहते चन्द्रलाल॥ अ
सुमता क्यूं त्यागी॥५॥२९३॥

ज्ञान की सुमता से।
राग-पणिहारी।

टेर। कांई उदासी थाने छा रही
सुमता बाई जी वो राज। कह्यो थारा मन
बात बाई राज॥

सुमता की ज्ञान राजा से।

टेर। हाथ जोड अर्जी करूँ जी सु
ज्ञानी जी ओ राज। कहता आवे म्हाने ल
ज्ञानी राज॥

ज्ञा०-(चोक०) चारण संग में आवि
ये-सुमता बाई जी ओ राज। दीनूं जीव
समझाय बाई राज॥ कांई उदासी थानै०॥

सु०--नेम धर्म भक्ति भाव संग करो जीव प्रवेश। वांने देवोनी सत उपदेश ज्ञानी राज ॥ हाथ जोड़ अर्जी० ॥३॥

ज्ञा०--दशों द्वारे पहरा रख्या, ये बाई थारें ये तायँ। कुमता नहीं आवे महलां मांय बाई राज ॥ कांई उदासी थाने० ॥ ३ ॥

सु०--सुण के खुशी भई प्रेम से जी करस्यूं जी मैं काज। कोई वणूं ली धर्म की मैं जहाज ज्ञानी राज ॥ हाथ जोड़ अर्जी०॥४॥

ज्ञा०--सत्य पतिवृत पाल ज्यो ए म्हारा बाई जी, ओ राज। कोई थारी ईश्वर राखे लाज बाई राज ॥ कांई उदासी थाने० ॥५॥

सु०--सुमता को सत ना डिगे,जी सुण ज्यो जी म्हारी वात। लज्जा रखे विश्वम्भर नाथ ज्ञानी राज ॥ हाथ जोड़ अर्जी० ॥६॥

ज्ञा०—सती को सत ना डिग्यो सु
ये दे ध्यान। चाहे डिगे धरणी असमान
राज॥ कांई उदासी थानै० ॥७॥

सु०—सीता कुन्ती द्रोपदी जी अ
ऋषिनार। तारादे मन्दोदर सती ये
ज्ञानी राज॥ हाथ जोड़ अर्जी० ॥८॥

ज्ञा०—इनमें तू निजसार है ये गावे
पुराण। तेरी चाल सदा ये परवाण
राज०॥ कांई उदासी थानै० ॥९॥

सु०—पुत्री को यो धर्म है वो म्हारा
जी वो राज। राखे कुल दोन्यूं की लाज
राज०॥ हाथ जोड अर्जी० ॥१०॥

ज्ञा०—मात पिता कलु काल में ये
दुनियां के मांय। कोई पुत्री न वेचर
वाई राज॥ कांई उदासी थानै० ॥११॥

सु०-ऐसे मात पिता नैं धृकार है जी कहती बारम्बार । जावैला वह जम के द्वार ज्ञानी राज ॥ हाथ जोड़ अर्जी० ॥१२॥

ज्ञा०--हे सुमता सांची तू कही लागी म्हारे ये दाय । कहे चन्द्र चरण चितलाय बाई राज ॥ कांई उदासी थानै० ॥१३॥२०६॥

कुमता की तृष्णा से ।

राग-शेखावाटी ।

टेर । मैंन छाई ये उदासी राजन् नहीं आसी ये दासी महल में ॥

तृष्णा की कुमता से ।

टेर । थांको दिल धीरज राखो वृथा क्यूँ भाखो बाई आप हो ॥

कु०-(चोक) दासी थानें कहूँ हकीकत सुण ज्यो म्हारी बात । सपना मांयँ

श्याम क स मैं देखी सुमता साथ. (झेला) देखी सुमता साथ राज की गेल में । खेले चौपड़ सार क दौन्यूँ महल में ॥ मैंन छाई ये उदासी० ॥१॥

तृ०--सपना की परतीत नहीं बाई झूंठा हो जंजाल । सपना मायं नृप वणे मन जागत हो कंगाल ॥ (झेला) जागत हो कंगाल मिल्यो नहीं राज हो । सपना को तो झूंठा सब साज हो ॥ थांको दिल धीरज० ॥२॥

कु०--दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा कांपे म्हारी काया॥ कदकी बैरन हुई सुमत या रची मोहिनी माया॥ (झेला) रची मोहिनी माया मन म्हारो दहल में। नहीं आसी राजन महल भंग हुयो सैल में ॥ मैंन छाई ये उदासी० ॥३॥

तृ०--धीर धरो बाई जी म्हारा क्यूँ इतरा घबराया। करूँ सुमत न पार अजी थे करज्यो

मन का चाया ॥ (झेला) करज्यो मन का चाया पिया संग रंग हो । राखो मन उमंग पड़े नहीं भंग हो ॥ थांको दिल धीरज० ॥४॥

कु०—सुण कर वात तुम्हारी दासी आई हमारे धीर । रुस्या श्याम मिलादे म्हारा देऊँ अमोलक चीर॥ (झेला) देऊँ अमोलक चीर रखूँ तनै संग मे । मन में होय उमंग संग पिव रंग में ॥ मैंन छाई ये उदासी० ॥५॥

तृ०—वाई जाऊँ ल्याऊँ राज नै सुणज्यो चित्त लगाय । मन चिन्ता मेटो सब वाई होसी थांकी साय। (झेला) होसी थांकी साय हुकम म्हानें देवो।सजो सभी शिणगार मान म्हारी लेवो ॥ थांको दिल धीरज० ॥६॥३१२॥

कुमता की तृष्णा से ।

रागिनी ।

टेर । बुलाल्या राजनै ये दासी जल्दी महलां जाय ।

नेम की दासी से।

रेखता।

टेर। फिरे क्यूँ सरवण के तू द्वार बता
कौन घरां की नार।

दासी की नेम से।

टेर। हटो तुम छोडो यहां द्वार खड़े
ों कुण हो राज कुमार॥

नेम०-(चोक) छोड़ूँ नहीं ये द्वार
ा ले बात जो मेरी। तेरा बता दे नाम
है कौन की चेरी। सच्चा कहो बैयान यहां
ों दे रही फेरी॥ फिरे क्यूं सरवण० ॥१॥

दा०-तुमरा बताओ नाम तुम क्यों
र पर ठाड़े। जाणे दो अन्दर महल मेरे
ू खडे आड़े॥ धीरे कहूं मैं बात तुम क्यूं
लते गाडे॥ हटो तुम छोड़ो० ॥२॥

ने०-असली का नहीं है काम चेरी झूंठ क्यों बोले । मेरा नाम है नेम मेरी बात सई सुणले । तू है बुद्धिहीन कमसल सत्य नहीं बोले ॥ फिरे क्यूं सरवण० ॥३॥

दा०-कैसा कहिये नेम तेरा देश दरशावो । क्यूं जो खड़े हो द्वार यां से दूर हट जावो ॥ जाने दो अन्दर महल नाहक देर लगाओ । हटो तुम छोडो० ॥४॥

ने०-कहता मैं बारम्बार अन्दर जाय मत चेरी । कांई नाम और जात बता झट क्यूं करे देरी ॥ मतना बणावे बात ड्योढ़ी आन क्यूं घेरी ॥ फिरे क्यों सरवण० ॥५॥

दा०-मेरा तृष्णा नाम कहूं मैं आपके तांई । मेरे जरूरत काम जाऊं महल के मांहीं । भेजी हे कुंमता नार बुलाण राज न आई ॥ हटो तुम छोड़ो यहां से० ॥६॥

ने०—हुकम नहीं है ज्ञान का चोकी लगे मेरी। कुमता का नहीं है काम सुमता राज ने धारी॥ आया ज्ञान महाराज हुकम कर गया जारी ॥ फिरे क्यूं सरवण०॥७॥

दा०—आया क्यूं म्हारे महल वो जो ज्ञान ही यांपे। म्हाका राज है मोह वाने देख सब कांपे। म्हारा कयो लो मान जावो धाम थे थांके ॥ हटो तुम छोड़ो० ॥८॥

ने०—मारूं तुम्हारे ताज़णा क्यूं बात वणावे। हट जा तू यहां से दूर मतना सामने आवे ॥ ल्यावो मोह को जाय जिसका जोर दिखावे । फिरे क्यूं सरवण० ॥६॥

दा०—जाऊं मेरे मकान मारण आप क्यूं धाया । मेरे भावे महाराज करो आप मन चाया ॥ थांका नहीं है दोष भेज्या ज्ञान के आया । हटो तुम छोड़ो०॥१

कुमता की तृष्णा से।

रागनी।

टेर। मोडी क्यूं आई ये दासी खबर्यां कांई ल्याई। राज न क्यूं नहीं आया ये जी॥

तृष्णा की कुमता से।

टेर। सरवण के द्वारे वाई जी नेम विराज्या। महलां में किण विध जाऊँ ये जी॥

कु०--(चोक) होगी ये दासी तू तो निमक हरामण। खोल जटा हूँ वैरागन ये जी। म्हारा महलां में दासी नेम क्यूं आया। वानै तो कोण बुलाल्या ये जी॥ मोडी क्यूं आई ये० ॥१॥

तृ०--नेम निमाणे वाई जी धर्म ठिकाणे। कांई जाणूं। कुण आण्या ये जी। सुमता

का करिया वो बाई जी करतब दीसे। होगी वैरागन चोड़े दीखे है ये जी॥ सरवण क द्वारै बाई जी० ॥ २॥

कु०--बूझो तो हो ये दासी नेम राजनै। कुण बुलाया थानै ये जी। दासी दिवानी वाको मर्म न जाणै। सुमता काई पिछाणै ये जी॥ मोड़ी क्यूं आई ये० ॥३॥

तृ०--शील नगर से बाई जी नेम तो आया। सुमता आप बुलाया ये जी। ज्ञान पधार्यो वो बाई जी नेम झिलाया। पीतम थारा चितल्याया ये जी ॥ सरवण क द्वारै बाई जी० ॥ ४ ॥

कु०--शील नगर नै ये दासी वां कुण जाणै। क्यूं तू वृथा ताणै ये जी। कहदे हकीकत म्हानै हो सो ये दासी। नहीं तर

दे द्यूं थारे पासी ये जी ॥ मोड़ी क्यूं आई ये० ॥५॥

तृ०-सुमता रो पीहर बाई जी शलि नगर हे । ज्ञान राज वांरो पिता ये जी । नेम कंवर वांरो भाई कहीजे । करणो होव सो करली जे ये जी ॥ सरवण क द्वार बाई जी० ॥६॥

कु०-सुमता तो दीसे ये दासी बड़ा ये घरां की । सांच न मानी मैं थांकी ये जी । करम कुमाया ये दासी चोड़े वह आया । सुमता पिव विलमाया ये जी ॥ मोड़ी क्यूं आई ये० ॥७॥

तृ०-मार्या वासां सैं बाई म्हारी खाल उड़ाई । जीव बचाय भागी आई ये जी ॥ थांके कारण ये बाई मैं मार ही खाई । दोष

देवोला अब कांई ये जी ॥ सरवण के द्वारै वाई जी० ॥८

कु०—दासी चालां ये म्हारा मोह पिता पै। राज जिमावां फेरूँ यांपे ये जी ॥ थानै मार्यां ये जांकी खाल उडावां। भीतर निमक भरांवा ये जी ॥ मोड़ी क्यूँ आई ये० ॥९॥

तृ०—हुकम उठाऊँ बाई जी जल्दी से चालां। मोह पिता नै दुख कहालां ये जी॥ जीवराज नै बाई जी वह समझासी। पाछे तो मेल मिलासी ये जी ॥ सरवण के द्वारै वाई जी० ॥१०॥३३९॥

मोहराजा की।

शेर।

अजी मैं मोह बलवान हूँ जाने है खलक तमाम जी। कामी क्रोधी कुटल नर बेद

बेच रख मान जी ॥ नकली वनावट भेष जोगी धरत मेरो ध्यान जी । रचूं जो पूरण जाल उन पर कर देऊँ अज्ञान जी ॥ कहता सभा में समझल्यो यह ही हमारा काम जी । चन्द्र कहे मोह का यह करतव सर्व सुणो दे ध्यान जी ॥३४०॥

मोह की ।

टेर। आया म्हे मोह राजा वल कारी जी म्हाने जाणै दुनियां सारी ॥ (दोहा) मोह राजा है नाम हमारा सव कोई जग में जाणे। काम क्रोध मद लोभ कुमत सव हुकम हमारो माने॥ आया म्हे मोह० ॥ १ ॥ कुमता पुत्री नाम हमारी जीव जाय वहकावे। लख चोरासी मायनै स वा फेरा खूब फिरावे ॥ आया म्हे मोह० ॥ २ ॥ काम क्रोध मद लोभ संग में पहरा चोकीदार। माया जाल रचां जीव पर जग में कर ख्वार॥ आया म्हे मोह० ॥३॥

कुटल कुचाली नीच करां नर चोर जुवारी
सारा । ममता तृष्णा, दुवध्या दुर्मत हुकम
उठावे म्हारा ॥ आया म्हे मोह० ॥ ४ ॥ मैं
सूता सुख नींद महल में कान पड़ी भन
कार । कौन खड़ा है द्वारे हमारे उवा क
पुकार ॥ आया म्हे मोह० ॥५॥३४५॥

वार्ता ।

कुमता तृष्णा को साथ ले पीहर
गई और लोभी से सारा हाल कह दिय
अव लोभी कुमता को साथ ले मोह रा
के पास जाता है और कुमता के दुख
वर्णन करता है ॥ ३४६ ॥

लोभी की मोहराजा से ।

टेर । अरज म्हारी सुणज्यो जी
रूपी राजन रा

मोह की लोभी से।

टेर। जगायो आके रे लोभी ऐसो कांई काम।

लो०—अरज करूँ कर जोड़ राजनै सुण सुरतो मेरा सरदार। जीवराज काया को राजा परणी सुमता नार॥ आशा तृष्णा दुवध्या दासी करी कुमत ने पार॥ अरज म्हारी सुण० ॥१॥

मो०—कांई दोष देवो वीं जिव नै है सव थांकी पोल। अंधकूप में जीव पड्यो हो किण दी खिड़की खोल॥ आयो कोई सन्तराज वां मार्यो जीव न वोल॥ जगायो आके रे० ॥ २ ॥

लो०—भूल हुई कोई म्हांकी राजन माफ करो तकशीर। वांको जतन करो कोई राजन जद धरसी दिल धीर॥ पूरी मदद देवोनी

म्हांनैं मारां मोटो मीर ॥ अरज म्हारी सुणज्यो, जी० ॥ ३ ॥

मो०--सब पूरा बदमाश होस थे लुच्चा बेईमान। काम क्रोध मद लोभ तुम्हारा सब का हरूँ प्रान ॥ जीवराज विश्नु घर जावे काढूं थांकी जान ॥ जगायो आके रे० ॥४॥

लो०--हाथ जोड़ अर्जी करां स थे देवो जान बखसीस । जीवराज न ल्यावां पकड़ के पूरण बिस्वा बीस ॥ अब के भूल रखां तो द्यो घांणीं में पीस ॥ अरज म्हारी सुणज्यो, जी० ॥५॥

मो०--जाग्रत विषय जीव को वासो नेत्र द्वारे जाण। सुखम मांय सलानी वसतो धर कण्ठां दरम्यान ॥ सुसुप्ति के मांय विराजे धर हृदय में ध्यान ॥ जगायो आके रे०॥६॥

लो०–जातग्र सुखम सुलुप्ति तुरिया २ अतित कहावे । वहां से परे परा से परे वां गयौ फेर नहीं आवे ॥ ऐसो जतन करो मोह राजा म्हाने छोड़ नहीं जावे ॥ अरज म्हारी सुण ज्यो जी० ॥७॥

मो०–म्हांसे परे परा से परे नहीं हय जीव को जाणूं । जबतक सतगुरु मिले न पूरा तबतक खैचा ताणूं ॥ उलटो होय पिछम को ध्यावे सोला सुन म्हारो थाणूं ॥ जगायो आके रे० ॥८॥

लो०–आप वड़े मोटे महाराजा चोदा लोक विस्तारा । थां में जीव वसे अंजाली सोई काल का चारा ॥ विना आपका ध्यान कियां विन रहे जगत से न्यारा ॥ अरज म्हारी सुणज्यो जी० ॥९॥

मो०—काम क्रोध मद लोभ दूत सब हो जाओ तैयार । जीवराज की मुश्क बांध कर ल्यावो म्हारै द्वार । पूरी त्रास दिखा कर वानै, करां कुमत नै लार ॥ जगायो आके रे॥ १०॥ ३५६ ॥

वार्ता ।

अपने महल में सूती हुई सुमता को सपना आया कि कुमता मोह राजा की सेना लेकर आरही है इस से चौंक पड़ी । अब जीवराज से सपने का हाल कहती है ॥३५७॥

सुमता की जीवराज से ।

टेर । सपनो मोय आयो साजन राज हो मोह दूत पठाया ॥

जीवराज की सुमता से ।

टेर । सपनो कांई आयो सुमता आपनै सब हाल सुणावो ॥

सु०-(दोहा०) सपनो आयो नींद में स
जी सुणज्यो म्हारा श्याम । मोह को जोर
चले नहीं कोई ऐसी देखो धाम ॥ अजी मोह
दूत पठाया ॥१॥

जी०-मूल मैल मञ्जन करूं स म्हाने
हुकम दियो गुरुराज । अष्ट कँवल के मांहि
विराजे ब्रह्मा जी महाराज ॥ अजी सब हाल
सुणावो० ॥२॥

सु०-सर्गुण नाम जपो निशवासर होसी
थांरी साथ । योतो मारग जोग को स पिव
थांसे सजसी नांय ॥ अजी मोह दूत पठाया
॥ ३ ॥

जी०-नाभ कँवल निज मांय विराजें
विश्नु श्री भगवान । हृदय ध्यान धरूं संकर
का गिरजा को पति जाण ॥ अजी सब हाल
सुणावो० ॥४॥

सु०--यो तो काम कठिन है पीतम नहीं साधन बण आवे । कलू मांय आधार नाम को सहजां ही तिर जावे ॥ अजी मोह दूत पठाया ॥५॥

जी०--कंठ कॅवल शारद महारानी करे ज्ञान प्रकाश । अला पिंगला सुखमना स जी सुमरे सासउसास ॥ अजी सब हाल सुणावो॥६॥

सु०--यो साधन कोई हरिजन साधे रहे निरंतर आप । ऐसे लोक वसे कोई जोगी जहां पुण्य नहीं पाप ॥ अजी मोह दूत पठाया ॥७॥

जी०--सुन है सोला आठ ही वारा ऊपर आंगल चार । ज़िणरे ऊपर एक ही विरवो मोक्ष रूप दातार॥ अजी सब हाल सुणावो ॥८

सु०--कहणी ज्यूं कहणी कहे स रहणी रहे न कोय । सतगुरु की रहणी रहे स तो

दुख काहे को होय ॥ अजी मोह दूत पठाया ॥९॥

जी०—थे सुन्दर सांची कही स यो मन है बेईमान । अष्ट पहर चौसट घड़ी स यो धरे पलक नहीं ध्यान ॥ अजी सब हाल सुणावो ॥ १० ॥

सु०—मन की तो मत मानो पीतम ल्यो निज मन नै धार । श्री विष्णु को ध्यान लगावो बेड़ा होसी पार ॥ अजी मोह दूत पठाया ॥ ११ ॥

जी०—सन्तोपी सुमरण करूँ स मैं हिये रटूँ हरनाम । सङ्कट विपत निवारणहारा साय करे म्हारी राम ॥ अजी सब हाल सुणावो ॥१२॥

सु०—शरणा की परतंज्ञा राखै वे छै दीन दयाल । अपणा जन की साय करे ला कहता चन्दरलाल ॥ अजी मोह दूत पठाया ॥१३॥
॥ ३७० ॥

कुमता की सुमता से।

रागनी–घुमाव।

टेर। या कुण सूती ये म्हारी शोक म्हारे रंग रै ढ़ोल्यै॥

सुमता की कुमता से।

टेर। मैं छूँ ये सुमता नार काँई बोल बोलती॥

राग–इन्द्रसभा।

कु०–तू व्यभिचारण नार है मैं कहती वादा साथ। नीचा कुल के मांय नै तू जनम लियो कुज्जात।

चौपाई।

सुमता को क्यूं नाम लजावे। तू व्यभिचारण नार कहावे॥ परहि पुरुप से तू प्रीत लगावे। अये फेर दारी क्यूँ सुमता कहावे॥ (तोड़) बोल-बात तू होष। इनै कदसै करियो दोस्त॥ अये म्हारे रंग के ढ़ोल्यै॥१॥

इन्द्रसभा ।

सु०--असली सो असली कहे कमसल कहे कुज्जात । मैं सुमता सरनाम हूँ जगत मांही विख्यात ॥

चौपाई ।

दोस्त हमारो है अविनाशी । अमरापुर का किया ये यानैं वासी ॥ आवागमन फेर नहीं आसी । गर्भवास को दुख मिट जासी ॥ (तोड़) है तू कुमता नार । करी तनै पार ॥ अये क्यूं बोल बोलती ॥२॥

इन्द्रसभा ।

कु०--स्याणी सुमता तू वनी अये हरण विराणू माल । ठैर जरा केसी करूँ मार उड़ाऊँ खाल ॥

चौपाई ।

अपरापुर के पास नहीं जावां । लख चोरासी में जीव भरमावां । विप रूपी वांने

इन्द्रसभा ।

कु०—तू कद की भई सुन्दरी ये फिरे और की लार । अपने ही घर धार ले ये नहीं और में सार ॥

चौपाई—।

सार वार सब जावोनी आगी । पिता हमारा है मोह वड़भागी ॥ दुर्मति देख संग सब लागी । तृष्णा न देख जावोली सब भागी॥ (तोड़) देखली पोल । मचादी रोल ॥ अये म्हारे रंग के ढोल्ये ॥ ७ ॥

इन्द्रसभा ।

सु०—सत्य कही सत्य मानली सत्य वचन प्रमाण । ल्यावो जल्दी मोह को क्यूं करती है तोफान ॥

चौपाई ।

पोल चोल कोई है नहीं यहां पे । आशा तृष्णा देख मन कांपे ॥ हरि सतसंग होय

निल जहां पे । मोह निकट नहीं आवे वहां पे । (तोड़) अब तू म्हारी मान । लगाले ध्यान ॥ अये क्यूँ बोल बोलती ॥८॥

इन्द्रसभा ।

कु०--बात सही तू मानली तो छोड़ जीव को साथ । रस्ते थारे लाग जा जो चावत है कुशलात ॥

चौपाई ।

घणो घमंड छायो है ये थारे । जाऊँ फौज ल्याऊँ ये म्हारी लारे ॥ बांसा की मार पड़ाऊँ ये थारे । जीवराज नै ल्यूं संग म्हारे ॥ (तोड़) देख हमारा काम । उड़ाऊँ चाम ॥ अये म्हारे रंग के ढोल्यै ॥९॥

इन्द्रसभा ।

सु०--उत्तम मेरी जात है सुमता मेरा नाम । जहां मेरा निवास है वहां नहीं कुमत का काम ॥

चौपाई ।

कुमता फौज ल्यावसी मोह की । विघन विनाशन सरणे में थांकी ॥ विष्णु भीड़ चड़ आवो म्हांकी । ज्यूं द्रोपत की लज्जा राखी ॥ (तोड़) चन्दर रह्यो है टेर । करो मत देर ॥ अये क्यूं बोल बोलती ॥ १० ॥३८०॥

सुमता की जीवराज से ।

लावणी ।

टेर । कुमता कुबुध करन की ठानी मोह जाय ल्यावे । अजी हृदय ईश्वर नाम रटो कोई निकट नहीं आवे ।

जीवराज की सुमता से ।

टेर । दशरथ नन्दन असुर निकंदन करुणा सुण आवे। दिल में धीरज धार कुमत का फन्दा कटजावे ॥

सु०—(चोक) काम क्रोध मद लोभ मोह संग फोज कुमत ल्यासी । लख चोरासी

मांय आप नै फेरूँ गिरवासी ॥ आशा तृष्णा दुवध्या दुर्मत संग लेर आसी। अंध कूप में नाख आपकी मुश्का वंधवासी । जाल फन्द में फसा पोल की चोकी वैठावै ॥ हृदय ईश्वर नाम० ॥ १ ॥

जी०--भगत उवारण कष्ट निवारण मदद राम आसी । काम क्रोध मद लोभ मोह सब देख भाग जासी॥ कुमता आशा तृष्णा ममता देख ही डर जासी । गौ विप्र प्रतिपाल भगत की त्रास मेट जासी ॥ चन्द्र चरण धार हिरद गुण ईश्वर का गावे ॥ दिल में धीरज धार० ॥ २ ॥ ३८२ ॥

मोहराजा की कुमता से ।

टेर । पाछी क्यूं आई कुमता आप ये म्हानें भेद वताओ ॥

कुमता की मोहराजा से,

टेर । सुमता जमायो पूरण राज वो थे सुणो पिता जी ॥

मो०--(दोहा) क्यूं आई तू आज ये स म्हानै कहो सभी समचार। फोज हमारी सब ही चाई भेजी थारी लार॥ चहरा बहुत उदास तुम्हारा कांई कीनू जार ॥ अये, म्हानै भेद बतावो ॥ १ ॥

कु०--कांई कहूँ कछु कही न जावे सुमता राज जमाया। काम क्रोध मद लोभ आपका कोई काम नहीं आया ॥ दशों द्वारे प्रहरा म्होनें नेम कंवर का पाया ॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ २ ॥

मो०--सुण कर तेरी वात को स वाई हम करी तैयारी । उठे झाक वदन के मांही चालूं लार तुमारी ॥ जीवराज की मुश्क बंधा

कर करस्यां बहुत खुवारी ॥ अये म्हानै भेद बताओ ॥ ३ ॥

कु०–हाथ जोड़ अर्जि करूं स थे अब मत देर लगावो ॥ जीवराज नै फसा फन्द में म्हारे संग खिंदावो ॥ म्हारो राज जमाद्यो बावल सुमता चाल हटाओ ॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ ४ ॥

मो०–रूप हमारा देख भयानक जीवराज घबराया। मुश्क बांध कर कोरड़ा स मैं अपने हाथ उठाया ॥ मार कोरड़ा तीन खेंच कर अपणे द्वारे ल्याया ॥ अये म्हाने भेद बताओ० ॥ ५ ॥

कु०–हे सुमता तू देख हमारा मोह पिता बलवान। जीव बचा कर भाग जास नहीं लेस्यूं थारा प्रान ॥ मार कोरड़ा खाल उड़ाऊँ करूँ बहुत हैरान ॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ ६ ॥ ३८८ ॥

कुमता की मोहराजा से।

टेर। सुमता जमायो पूरण राज वो थे सुणो पिता जी ॥

मो०--(दोहा) क्यूं आई तू आज ये स म्हाने कहो सभी समचार। फोज हमारी सव ही वाई भेजी थारी लार॥ चहरा वहुत उदास तुम्हारा कांई, कीनू जार ॥ अये, म्हाने भेद वतावो ॥ १ ॥

-कु०--कांई कहूँ कछु कही न जावे सुमता राज जमाया। काम क्रोध मद लोभ आपका, कोई काम नहीं आया॥ दशों द्वारे पहरा म्हानैं नेम कंवर का पाया॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ २ ॥

मो०--सुण कर तेरी वात को स वाई हम करी तैयारी। उठे ज्ञान चदन के मांही चालूं लार तुमारी॥ जीवराज की मुश्क वंधा

कर करस्यां बहुत खुवारी ॥ अये म्हानै भेद बताओ ॥ ३ ॥

कु०–हाथ जोड़ अर्जि करूं स थे अब मत देर लगाओ ॥ जीवराज नै फसा फन्द में म्हारे संग खिंदावों ॥ म्हारो राज जमाद्यो बावल सुमता चाल हटाओ ॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ ४ ॥

मो०–रूप हमारा देख भयानक जीवराज घबराया । मुश्क बांध कर कोरड़ा स मैं अपने हाथ उठाया ॥ मार कोरड़ा तीन खैंच कर अपणै द्वारै ल्याया ॥ अये म्हानै भेद बताओ० ॥ ५ ॥

कु०–हे सुमता तू देख हमारा मोह पिता बलवान । जीव बचा कर भाग जास नहीं लेस्यूं थारा प्रान ॥ मार कोरड़ा खाल उड़ाऊँ करूँ बहुत हेरान ॥ अजी थे सुणो पिता जी० ॥ ६ ॥ २८८ ॥

सुमता की करुणा भगवान से।

राग–मोहिनी।

टेर। अरज म्हारी सुण ज्यो दीनदयाल कुमत नै रचो मेरे पे जाल ॥ (चोक) कुमत ने दुख वोत दीनां। पिया कूँ कैद मोह कीना पीव विन मुश्किल जग जीना। आपका शरणां मैं लीना। प्रभु म्हारो कष्ट हरो तत्काल। कुमत नै रच्यो मेरे पे जाल० ॥१॥ आव चेतायो कुम्हारी। करणा कीनी मिणजारी। सिरियादे आई सरण थारी। त्रास प्रहलाद दई भारी बचाया मिणजारी का लाल ॥ अरज म्हारी सुन० ॥२॥ गज्ज और ग्राह लड़े जल में। हार जब मानी गज मन में ॥ चित्त उन दीनू चरणन में। गज्ज की टेर सुणी छिन में। उवार्या गज्जराज का वाल ॥ अरज म्हारी सुण० ॥३॥ बृज पे इन्दर कोप कियो भारी। करी उन वरसन की त्यारी। डूवन जब लगी बृज सारी।

गिरवर नख धार्यो गिरधारी । बचाया वृज ग्वाल और बाल ॥ अरज म्हारी सुण० ४ ॥ भारत में भंवरी करी पुकार । जाण जन सुध लीनी करतार । करी अंडा की जुध में सार । हरि तुम गज घंटा दी डार । पक्षी पर दया करी नन्द लाल ॥ अरज म्हारी सुण० ५॥ दुसाशन क्रोध कीयो भारी । खैचयूं चीर कियो जारी । द्रोपद हुई सरणागत थारी आज हरी राख लाज म्हारी । आप हरि भक्तन के प्रतिपाल ॥ अरज म्हारी सुण० ॥६॥ आप हरि कई भक्त तारे । नाम मैं नहीं जाणूं सारे । नाव आ अटकी है मझधार । करो हरि भवसिन्धु से पार । बचाओ म्हानें दुष्टों से गोपाल । अरज म्हारी सुण० ॥ ७ ॥ सरण में सुमता हूं जारी । अब हरि खोल पलक थारी । दुःख गौ कन्या पे भारी । नाथ अब लाज राख म्हारी । वीनती करता चन्द्र-लाल ॥ अरज म्हारी सुण० ॥ ८ ॥ ३६६

लक्ष्मी जी का। शेर।

खमा खमा घणी खमा हो जगत के प्रतिपाल जी। जांग्या क्यूँ काची नींद से इस का कहो प्रभु हाल जी ॥ लक्ष्मी कहे कर जोड़ कर सुणज्यो थे दीन दयाल जी। सेवा में कांई चूक हुई कोप्या क्यूँ श्री गोपाल जी ॥ ४०८ ॥

भगवान का। शेर।

मृत्यु लोक में भक्त यक बस कष्ट के सुमिरण किया। कुमता का कहणा मान मोह ने जाल उस पर रच दिया ॥ तेरा नहीं कुछ दोष लक्ष्मी हर्ष में राखो हिया। खेंचे है उसकी डोर मुझकुं ठोर वहां जाना प्रिया ॥ ४०९ ॥

लक्ष्मी जी की भगवान से।
राग- शेखावाटी।

टेर। कांई चूक हमारी निन्द्रा क्यूँ दीनदयाल जी।

भगवान की लक्ष्मी जी से।

टेर। भई भीड़ भगत में थरहर सिंगा-
सण धूजे लक्ष्मी ॥

ल०-(चोक) निन्द्रा काची तजी आप
क्यूँ चूक हुई कांई म्हारी । प्रभू जी कहो
हकीकत सारी। शेष सेज सुख नींद विसारी
या कांई दिल में धारी ॥ प्रभु जी अरज सुणो
थे म्हारी ॥ त्रिभुवन के रक्षक प्रतिपालक
कांपे काया म्हारी ॥ प्रभू जी मैं अर्धाङ्गि
थांरी ॥ (झेला) मैं अर्धाङ्गि थांरी लाज
म्हारी राख जो। आव मन विश्वास सत्य-प्रभु
भाप ज्यो ॥ कांई चूक म्हारी० ॥१॥

भ०-भगत भीड़ वश करुणा कीनी
सिंगासन थरांयो। मोह ने उसकूँ आण सतायो॥
कुमता तृष्णा ममता मद ने घेरो आण
लगायो। लक्ष्मी भगत वोत घबरायो। करके

लक्ष्मी जी का । शेर ।

खमा खमा घणी खमा हो जगत के प्रतिपाल जी। जाग्या क्यूँ काची नींद से इस का कहो प्रभु हाल जी ॥ लक्ष्मी कहे कर जोड़ कर सुणज्यो थे दीन दयाल जी । सेवा में कांई चूक हुई कोप्या क्यूँ श्री गोपाल जी ॥ ४०८ ॥

भगवान का । शेर ।

मृत्यु लोक में भक्त यक वस कष्ट के सुमिरण किया । कुमता का कहणा मान मोह ने जाल उस पर रच दिया ॥ तेरा नहीं कुछ दोष लक्ष्मी हर्ष में राखो हिया । खेंचे है उसकी डोर मुझकुं ठोर वहां जाना प्रिया ॥ ४०६ ॥

लक्ष्मी जी की भगवान से ।
राग- शेखावाटी ।

टेर । कांई चूक हमारी निन्द्रा क्यूँ त्यागी दीनदयाल जी ।

भगवान की लक्ष्मी जी से ।

टेर । भई भीड़ भगत में थरहर सिंगा-
सण धूजे लक्ष्मी ॥

ल०-(चोक) निन्द्रा काची तजी आप क्यूँ चूक हुई कांई म्हारी । प्रभू जी कहो हकीकत सारी । शेष सेज सुख नींद विसारी या कांई दिल में धारी ॥ प्रभु जी अरज सुणो थे म्हारी ॥ त्रिभुवन के रक्षक प्रतिपालक कांपे काया म्हारी ॥ प्रभू जी मैं अर्धाङ्गि थांरी ॥ (झेला) मैं अर्धाङ्गि थांरी लाज म्हारी राख जो । आव मन विश्वास सत्य-प्रभु आप ज्यो ॥ कांई चूक म्हारी० ॥१॥

भ०-भगत भीड़ वश करुणा कीनी सिंगासन थर्रायो। मोह ने उसकूँ आण सतायो॥ कुमता तृष्णा ममता मद ने घेरो आण लगायो । लक्ष्मी भगत वोत घबरायो । करके

करुणा सरणा लीना काची नींद जगायो। खेंच रही डोर जोर म्हाने आयो। (झेला) जोर म्हाने आयो तेरी कुछ चूक ना। भगत बचावन काज मुझे वहां पूगना ॥ भई भीड़ भगत० ॥ २ ॥

ल०— चरण पलोटे लक्ष्मी स थे करो प्रभु आराम । रात मत त्यागो जी निद्रा श्याम। कोन गढ़ा का रहने वाला कौन भगत कांई नाम ॥ प्रभू जी जावो तो किसके धाम। जो प्रभु भगत बचावन जाओ भोर होणद्यो श्याम। प्रभू जी थे हो पूरण काम । (झेला) थे हो पूरण काम चन्द्र नित का रटे। सुमर्या होवें सिद्ध संकट सब का हटे ॥ कांई चूक हमारी० ॥ ३ ॥

भ०—कायागढ़ का जीवराज है भगत बहोत दुख पावे। लक्ष्मी अब नहीं निद्रा

आवे ॥ देर लगाकर लक्ष्मी से म्हारो मतना विरद लजावे । नाम म्हारो जग झूंटो होजावे ॥ मैं नहीं मानूं एक तुम्हारी डोरी खैंच्या जावे। बचावन भक्त अभी हम जावें ॥ (झेला) हांजी अभी हम जावें कष्ट जाकर हरां ॥ चन्द्र की सुण टेर काज उस का करां ॥ भई भीड़ भगत० ॥ ४ ॥ ४१२ ॥

जीवराज की सुमता से ।

रागनी ।

टेर । डर्यां मोह जाल से ये तेरा झूंठा, है गोपाल ॥

सुमता की जीवराज से ।

टेर । धीरज दिल में धरो हो पिव जी आसी दीन दयाल ॥

जी०-(चोक) स्वार्थ की वाके प्रीत है ये सुमता सुण जे चित्त लगाय । विन मतलब

झांके नहीं ये तू तो झूंठा जस रही गाय ॥
डर्या मोह जाल० ॥१॥

सु०--जल डूबत गज तारियो हो पिव
जी गावे वेद पुराण । द्रोपत चीर वधाविया
हो अपना पांडु भगत पिछाण ॥ धीरज दिल
में धरो० ॥ २ ॥

जी०--गज नै गणपत जाण के ये
सुमता ग्राह से लियो बचाय । बहन द्रोपद
जाण के ये वाकी साय करी है आय ॥ डर्या
मोह जाल० ॥ ३ ॥

सु०--मारी पूतना जान से वै तो अंचल
हर्या पिरान । मुथरा कंस पछाड़ियो हो पिव
जी भगत देव पहचान ॥ धीरज दिल में
धरो० ॥ ४ ॥

जी०--दासी मारी ... सुमता
नहीं सूरां को कामा ॥ म ... य

ये सुमता उगरसेन को नाम ॥ ड्यां मोह जाल० ॥ ५ ॥

सु०--निर्धन भगत उवार्यो हो पिव जी विप्र सुदामा आप । कञ्चन महल वणा दिया हो वाकी हरली तीनूं ताप ॥ धीरज दिल में धरो० ॥ ६ ॥

जी०--वालपना की दोस्ती ये सुमता पढ्या एक पोसाल । पहली चांवल खालिया ये सुमता पाछ कर्यो निहाल ॥ ड्यां मोह जाल० ॥ ७ ॥

सु०--मीरा विष नें पी गई हो पिव जी सच्चा ईश्वर जान ॥ पूरण प्रेम पिछाण के हो प्रभु जी अमृत कीनो आन ॥ धीरज दिल में धरो० ॥ ८ ॥

जी०--सत्य नाम रटना रटूं हे सुमता सत्य वचन परवाण । आणू हो तो आवसी

ये मैं तो सत पर तजूं पिरान ॥ ड्यों मोह जाल० ॥ ९ ॥

सु०--तारन कारण आविया हो प्रभु जी ऊठो नैन निहार । मोह कुमता सव भग गया हो पिव जी देख हरी श्रोतार ॥ धीरज दिल में धरो० ॥ १० ॥

जी०--दर्शन कर परसन हुया हो प्रभू के पड्यो चरण में आय । चन्दर की विनती सुणो हो प्रभू जी कर भक्तां की साय ॥ ड्यों मोह जाल० ॥११॥४२४॥

विस्नुभगवान की जीवराज से ।

(रागनी)

टेर। भगत वश मैं फिरूँ चो हूँ मैं भक्तां को आधीन ।

जीवराज की भगवान से ।

टेर । कुमत फन्द डारियो हो प्रभु जी मोह से दियो बंधाय ॥

वि॰नु--(दोहा) भगत भरोसो जाणसी वो जाका पूरण होसी काम। निशवासर विसरे नहीं वो म्हारो रटे सत से नाम॥ भगवत वश में फिरूँ॰ ॥ १ ॥

जी॰--(दो॰) हरि माया बलवान है जी प्रभु जी कोई न पायो पार। नाम विसार्यो आपको वो प्रभु जी कुमत फन्द दियो डार॥ कुमत फन्द डारियो॰ ॥ २ ॥

वि॰--गर्भवास बस कष्ट में वो तू तो कीनूं कोल करार। बाहिर सुख से आय के वो तू तो दीनूं नाम विसार। भगवत वश में फिरूँ॰ ॥ ३ ॥

जी॰--काम क्रोध मद लोभ ने जी प्रभु जी घेर लियो मोहे आन। कुमता तृष्णा मोह ने जी प्रभु जी फसा छुडायो ध्यान॥ कुमत फन्द डारियो॰ ॥ ४ ॥

वि०–सत्य सुमत धारण करी जी थारी पूरी मन की आस। काम क्रोध मद लोभ मोह वो थारै कुमता रह न पास॥ भगवत वश मैं० ॥ ५ ॥

जी०–चरण कमल हृदय धरूँ जी प्रभु जी कर जोड करूँ अदास। कुमता पिता समझाय द्यो जी प्रभु जी आवे मन विश्वास॥ कुमत फन्द डारियो० ॥६॥४३०॥

मोह की भगवान से।

लावनी।

टेर। मुझे लाया पकड़ के दूत त्रास दिखला कर। मैं हाजर हूँ महाराज चरण को चाकर।

भगवान की मोह से।

टेर। कुमता का कहना मान जाल फैलाया। ले कुटुम्ब संग आ मेरा भक्त सताया।

मो०–हरि भक्त आपका मैं नहीं इस को जाना। इसलिये कुमत का कहा नाथ मैं माना॥ मैं त्रास दिखाई जान इसे अज्ञाना। अब मैं प्रभु इसे पूरण भक्त पिछाना॥ सुमता का बताया नाथ संग थे आकर। हाजर हूँ महाराज चरण को चाकर ॥१॥

भगवान–सुमता का कीना संग धीरज इन धारी। मैं भेज ज्ञान को हुकम कराया जारी॥ संतोषी सन्त उपदेश काज देहधारी। उन नेम धर्म वृत धार कुमत करी न्यारी॥ हरि भजन शील संतोष बोल कोल करवाया॥ ले कुटुंब संग आ मेरा भक्त सताया ॥२॥

मो०–सुमता को बासो भगत मांय बतायो। मुझे जान कुकर्मी नाथ आप विसरायो। जमराज हुकम से मृत्युलोक में आयो। प्रभु वास बतावो दास बहुत घबरायो॥ थां

वि०–सत्य सुमत धारण करी जी थारी पूरी मन की आस। काम क्रोध मद लोभ मोह वो थारै कुमता रह न पास॥ भगवत वश मैं० ॥ ५ ॥

जी०–चरण कमल हृदय धरूँ जी प्रभु जी कर जोड करूँ अर्दास। कुमता पिता समझाय द्यो जी प्रभु जी आवे मन विश्वास॥ कुमत फन्द डारियो० ॥६॥४३०॥

मोह की भगवान से।

लावनी।

टेर। मुझे लाया पकड़ के दूत त्रास दिखला कर। मैं हाजर हूँ महाराज चरण को चाकर।

भगवान की मोह से।

टेर। कुमता का कहना मान जाल फैलाया। ले कुटुम्ब संग आ मेरा भक्त सताया।

मो०–हरि भक्त आपका मैं नहीं इस को जाना। इसलिये कुमत का कहा नाथ मैं माना॥ मैं त्रास दिखाई जान इसे अज्ञाना। अब मैं प्रभु इसे पूरण भक्त पिछाना॥ सुमता का बताया नाथ संग थे आकर। हाजर हूँ महाराज चरण को चाकर॥१॥

भगवान–सुमता का कीना संग, धीरज इन धारी। मैं भेज ज्ञान को हुकम कराया जारी॥ संतोषी सन्त उपदेश काज देहधारी। उन नेम धर्म वृत धार कुमत करी न्यारी॥ हरि भजन शील संतोष बोल कोल करवाया। ले कुटुंब संग आ मेरा भक्त सताया॥२॥

मो०–सुमता को बासो भगत मांय बतायो। मुझे जान कुकर्मी नाथ आप बिस रायो। जमराज हुकम से मृत्युलोक में आयो प्रभु बास बतावो दास बहुत घबरायो॥ थ

नाथ द्याल० ॥ ५ ॥ अचल अभय वर भक्ति वर,द्यो हृदय कीजो वास । कलियुग कष्ट पड़े भक्तां से आ पूरो प्रभु आस ॥ पधार्यो दीना-नाथ द्याल० ॥६॥ माह महीने वसंत पञ्चमी सोमवार सुद जान । संवत गुन्नीसे गुन्न्यासी विक्रम साल पिछाण ॥ ७ ॥

लेखक का ।

टेर । अरज म्हारी सुणज्यो जी सज्जन मजल्लिस के दरम्यान ॥ हाजर ख्याल आपके कीनो बुद्धि के अनुसार । जीवराज सुमता राणी को ख्याल सुणायो गार ॥ भूल चूक ज्यो होय हमारी लीजो कवि सुधार । अरज म्हारी सुणज्यो जी० ॥१॥ माफ करो मेरे को आप तकलीफ उठाई भारी । रैन गुजारी नींद विसारी लीनि सुधि हमारी ॥ ज्ञान ध्यान और नेम धर्म से रीजो आप सत

धारी अरज म्हारी सुणज्यो जी० ॥२॥ नेकी धीरज सत सुमता को सज्जन चित में धारो। शील और सन्तोष धारज्यो कहवे दास तुमारो॥ परउपकार दया रख मन में हरि को नाम उचारो॥ अरज म्हारी सुणज्यो जी० ॥३॥ राधामाधो जी का मन्दिर कहिये सेवक कुमावत जान। "प्रहलाद" पुजारी पूजा करता सुत "मंगल" (जी) का जान॥ तन मन सेंती सेवा करता धरे प्रेम से ध्यान॥ अरज म्हारी सुणज्यो जी० ॥४॥ नया सहर में वास दास का डिग्गी कनै मुकाम। जात मेरी कुमावत हे जी "चन्दर" मेरा नाम॥ हाथ जोड़ मैं करूँ वीनती सब झेलो जे राम ॥५॥

इति शुभम्।

ज्ञानप्रकाश ख्याल

का

द्वितीय भाग समाप्त।